॥ श्रीः ॥

औरंगज़ेब नामा,

अर्थात्

मुगलसम्राट् महीउद्दीन मोहम्मद औरंगज़ेब
आलमगीर बादशाह का सचित्र
इतिहास ।

जिस को

राय मुन्शी देवीप्रसादजी मुन्सिफ राज्य जोधपुर इतिहासवेत्ताने फारसी तवारीख मआसिर आलमगीरी से सरल हिन्दी-भाषा में उल्था करके उपयोगी टिप्पणी तथा तत्संबंधी विशेष संग्रहादि से अलंकृत कर लिखा ।

वही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बम्बई

निज "श्रीवेंकटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें

मुद्रितकर प्रकाशित किया ।

संवत् १९६६ फसली १३१८-१९ सन् १९०९ ई०.
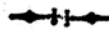
बाबरशाह,

अकबरशाह,

औरङ्गज़ेब

बहादुरशाह

उपक्रमणिका।

मुगल बादशाहोंने बहुत वर्षोंतक हिन्दुस्तान की बादशाही की है और हिन्दुओं-का अच्छा बुरा तथा नफा नुकसान उनके हाथों में रहा है। इसपर भी उनका कोई इतिहास हमारी हिंदी भाषामें नहीं है और जो कुछ है भी तो टूटा फूटा और गपशप है, इस वास्ते हम उनका संक्षिप्त इतिहास फारसी तवारीखोंका आशय लेकर अपनी सरल बोलीमें लिखते हैं।

मुगल जाति तुर्कोंसे पैदा हुई है और तुर्क बहुत पुरानी जाति उत्तराखण्डकी जातियोंमें से है. जिसका कुछ परिचय तुरुष्कके नामसे हमारे पुराने ग्रंथो (इतिहास और पुराण वगैरः) में भी मिलता है, कई विद्वान ऐसा अनुमान करते हैं कि तुरुष्क चन्द्रवंशी राजा ययातिके बेटे तुरुके वंशमें हैं परंतु मुसल्मान इतिहासवेत्ता कहतेहैं कि आदम जिससे सब आदमियोंकी सृष्टि चली है तुर्कोंका भी मूल पुरुष है। आदम की दसवीं पीढ़ी में नूह पैगम्बर हुआ। नूह के बेटे याफस का बड़ा बेटा तुर्क था तुर्क लोग उसकी औलाद में हैं। इस बातको तुर्कभी मुसल्मानी मत मानने के पीछे से मानने लगे हैं, नहीं तो पहिलेके तुर्क अपनी उत्पत्ति आदम से बहुत पुरानी मानते थे। उनका संवत्सर जो आईन अकबरी में लिखा है आदम के समय से (जिसे मुसलमान और ईसाई सात हजार वर्ष के लगभगही मानते हैं) २६ गुंना पुराना है जिसकी संख्या आज हमारे विक्रमी संवत् १९६२ में १ लाख ८९ हजार और ६ वर्षों की होती है।

ऐसेही उनकी तवारीख भी बहुतः पुरानी होगी परन्तु वह हिन्दुस्तानमें तो देखी सुनी नहीं जाती, तुर्किस्तान और मुग़लिस्तान वगैरह तुर्कों के मुख्य देशोंमें कहीं उन लोगों के पास होगी जो मुसलमान नहीं होगये हैं। ऐसी हालत में हमको लाचार उन्हीं तवारीखोंसे काम लेना पड़ता है जो मुसलमानों की बनाई हुई हैं, ये तवारीखें भी बहुत हैं क्योंकि तुर्कोंने मुसल्मान होने के पीछे असली मुसलमान अर्थात् अर्बोंके फ़तह किये हुए सारे मुल्कही उनसे नहीं ले लिये वरन उनके सिवाय नये मुल्क भी फ़तह किये थे, इस प्रकार उनका राज दुनियाभरमें

फैल गया था। अब भी रूम, ईरान, और तूरान, वगैरहके मुसलमान बादशाह तुर्क ही हैं। हिन्दुस्तानमें भी मुगलों के पहिले वही बादशाह थे। बल्कि हिन्दुस्तान को हिन्दुओं से फतह ही उन्होंने किया था, परन्तु हम इस छोटेसे ग्रंथमें जो कि सिर्फ हिंदुस्तानके मुगलबादशाहों की राज्यव्यवस्था से संबंध रखता है तुर्कोंकी तवारीखका सार खेंचना जरूरी नहीं समझते केवल उनकी पीढ़ियां-मात्र लिखकर आगे मुगलों को भी स्थूल रूप से आदि से लेकर उनका हिंदुस्थान-में बादशाह होने तकका बयाँन लिखते हैं, फिर बादशाह होने से पीछे का हाल विस्तार पूर्वक लिखेंगे क्योंकि हमारी असली गरज हिन्दुस्तान के इतिहास से है। इसके वास्ते अकबरनामा बहुत अच्छा आधार है जिसमें मुगलों की पीढ़ियां और उनकी पुरानी व्यवस्था बहुतसी तवारीखों का निचोड़ लेकर लिखी गई है। उसके तीन दफ्तरों में से पिछले दो में तो अकबर बादशाह का पूरा इतिहास है। शेष और पहिले दफ्तरों में पीढ़ियां और उनका कुछ कुछ वृत्तांत बाबर बादशाहतक है बाबर के पीछे हुमायूं की पूरी तवारीख है। हम इस दफ़तर को चारखण्डोंमें लेते हैं।

पहिले खंडमें पीढिया अमीर तेमूर तक,

दूसरे खंडमें अमीर तेमूर और उनके वंशकी एक शाखा का वृत्तान्त बाबर-बादशाहतक जो हिन्दुस्तान से संबध रखती है।

तीसरे खंडमें बाबर बादशाह की तवारीख जिसमें बाबर की स्वयं लिखी हुई दिनचर्या से भी विशेष बातें बढ़ाई गई हैं।

चौथे खण्डमें हुमायूं बादशाह का पूरा इतिहास।

आशा है कि पढनेवालों को यह मेरा परिश्रम स्वीकृत होगा और इस ग्रन्थ को हिन्दी साहित्य के रत्नभण्डार में आदरपूर्वक स्थान मिलेगा क्यों कि इस से हिन्दी-के इतिहासाभावके अन्धेरे घुप भवन में थोड़ा बहुत इसका प्रकाशका जरूर पड़ेगा

जोधपुर (मारवाड़) }

भवदीय--
देवीप्रसाद.

भूमिका।

मोहम्मद अमीन मुन्शी का बेटा मिरजा मोहम्मद काज़िम औरंगजेब बादशाह की तवारीख आलमगीरनामाके नाम से लिखता था, जब वह १० बर्ष का हाल लिख चुका तो बादशाह ने आगे लिखने की मनाही करदी।

बादशाह के मरे पीछे शाहआलम बहादुरशाहके राज्य में मोहम्मद साकी मुस्तइद-खां ने नव्वाब इनायतुल्लाहखां के कहने और मदद देनेसे हजूर और सूबोंके अख-बारों की फर्दें जमा करके ४० वर्ष का बाकी हाल लिखा और जो कुछ उसने देखा था या मोतबर लोगों से सुना था वह भी उसमें बढ़ाकर "मआसिरआ-लमगीरी" नाम एक ग्रंथ सन् ११२२हि. (संवत् १७६७) में रचा। फिर अगले १० वर्षके हाल का खुलासा मिरजा काजिम के आलमगीरनामे से लिखकर उसके शुरू में लगादिया। इसतरह यह मआसिरआलमगीरी औरंगजेब बादशाह के ५० वर्ष राज करने की तवारीख खुलासे के तौर पर है। बहुत तफ़सील के साथ तो है नहीं जैसा कि शाहजहां का बादशाहनामा है या खुद आलमगीरनामा है।

खाफीखांने भी जिसकी तवारीख मशहूर है लिखाहै कि "जब १० वर्षपछे[1] तवारीख लिखनेवाले उस बड़े बादशाह का हाल लिखने से रोके गये तो भी कई मुनशियों और खासकरके मुस्तइदखां ने पोशीदा तौरपर कुछ २ हाल दक्खन के किलों और शहरों के फतह करने का बुरीबातों को छोड़कर लिखा, बृन्दाबने दूसरे १० और तीसरे १० वर्ष में से कई सालों का थोड़ा थोड़ा हाल तहरीर किया। कोई ऐसी तवारीख कि जिस में ४० वर्ष का विलकुल खुलासा या पूराहाल हो देखी और पाई नहीं गई, इसवास्ते सन् ११ से सन् २१ जलूस तक "हजरत खुल्द, मकां-नी[2] (औरंगजेब) की सलतनत का हाल तारीख महीने और वर्ष के साथ लिखने के लिये कोई सिलसिला हाथ नहीं आसका, मगर इसके पीछे तो पूरी पूरी कोशिश करने और ढूढ़ने से लिखने के लायक अच्छे अच्छे हाल अखबारके दफतरों मोतबर याद-रखनेवालों और उस बड़े बादशाह के बाज़े कदीमी मुसाहिबों या पास रहने वालों और बूढ़े ख्वाजा-सराओं से पूछ पूछ कर तहकीक किये और जो कुछ खुदने होश संभाले पीछे अपने आंखों से देखे थे और याद रखे थे वे सब लिखे"।

---

(१) शुरू। (२) औरंगजेब का खिताब।

खाफ़ीखां के इस लिखनेसे भी "मआसिरआलमगीरी" औरंगज़ेब की पूरी तवारीख मालूम नहीं होती और यह भी सच है कि दक्खन की लड़ाईयों में जितना कुछ बादशाही फौजों का नुकसान हुआ और जो जो तकलीफें बादशाह को उठानी पड़ी थी वह सब हाल जैसा साफ तौर से ख़ाफ़ीखां ने लिखा है वैसा मआसिरंआलमगीरी में नहीं है तो भी यह बात नहीं है कि मआसिरआलमगीरी अधूरी तवारीख़ हो, वह उन सब किताबों में जो औरंगज़ेब बादशाह की तवारीख़ पर लिखीगई हैं मोतबर गिनी जाती है और इसीलिये ऐशियाटिक सोसाइटी बंगाल ने भी उसे कलकत्ते के मोलवियों से सही कराकर सन् १८७१ । संवत् १९२८) में छपवाई है। हिन्दी भाषा में औरंगजेब की कोई तवारीख़ न होने से हमने भी उसीका उलथा करना उचित समझा।

हमने पहिली पहल संवत् १९२७ में मुआसिरआलमगीरी की कलमी नकल टोंक के एक मुसलमान मित्र के पास देखी थी और उसमें से हिन्दुओं के साथ संबंध रखने वाली बातें छांट ली थीं, फिर जोधपुर में दो छपीहुई प्रतियां ख़रीदीं। एक तो वही कलकत्ते की छपीहुई है जिसका ब्योरा ऊपर आगया है,दूसरी आगरे के इलाही नामक लेथो प्रेस की छपी है यह कलकत्ते वाली प्रति से कुछ गलत है । हमने इसी को आगे रखकर यह तरजुमा लिखा, फिर कलकत्ते वाली से मिलाया और आख़ीर में उस खुलासे से भी टकराया जो कलमी प्रतिसे लिखागया था और जहां जो फ़र्क़ निकला वह नीचे हाशिये में लिखदिया।

मआसिरआलमगीरी में जिलूसी वर्ष अरबी महीने और दिन लिखे हैं, उस के साथ विक्रम संवत् महीने तिथि और दिन गणितकरके ब्रेकिट में हिन्दीवालों के सुभीते के लिये लिखदिये हैं। इस में तरजुमा करने से जियादा महनत पड़ी है फिर भी जो कहीं इस गणित तथा तरजुमें में भूलचूक रहगई हो तो पढ़नेवाले माफ़ करें और जो सुधार सकें तो सुधार दें क्यौं कि यह सर्व साधारण के हितका काम है।

मआसिरआलमगीरीके रचयिताका कुछ हाल।

मोहम्मद साकी ने मआसिरआलमगीरी में जहां जहां प्रसंग आतागया है अपना भी कुछ हाल लिखाहै। जिससे जानाजाताहै कि यह औरंगजेबके मुसाहिब बखत-

(१) इस गणित की जांच के लिये पुराने पंचांग भी ३०० बर्ष के जमा करलियेगये हैं।

वरखांका दीवान और मुनशी था। उसके लिखे हुये पोशीदा हुक्मोंके मसौदे बादशाहकी नज़र से गुजरा करते थे, जिससे बख़तावरखांके मरने पर सन् १०९६ (संवत् १७४२) में बादशाह ने बुलाकर उसको अपने नोकरों में दाखिल कर लिया। तब तो बृहस्पतिवार के अखवार लिखने का काम दिया था फिर जानेमाज, खांने का मुंशरिफ बनाया फिर खवासों की मुंशरफी भी दी। इन कामों के सिवाय पोशीदा और जरूरी हुक्म भी वही लिखता था। अख़ीर में नज़ारत के कागज़ लिखने का भी इख़तियार उसीको दिया गया और उसका बेटा हाफ़िज़ मोहम्मद महोसन उसकी जगह वक़ायानवीसी (अखबार लिखने) पर मुक़र्रर हुआ। इस तरह मोहम्मद साक़ी २१ वर्ष तक औरंगजेब के पास रहकर खूब जानकार होगया था और इसी प्रसंग से हुक्म न होने पर भी वह बहुत सी तवारीखी याददाश्तें लिखसका था।

औरंगजेबके हालकी दूसरी तवारिखें।

"मआसिर आलमगीरी" के सिवाय एक और भी तवारीख, औरंगजेब बादशाह के हालकी राफ़त नामसे किसी मुन्शीकी बनाई हुई है, पर उसमें "मआसिर आलमगीरी" के बराबर हाल नहीं है। वह भी हमने पढ़ी और अपने तरजुमे से मिला कर उसमें जो कहीं कोई बात जियादा देखी वह हाशियें में लिखदी।

दूसरे एक और किताब "सवानह आलमगीरी" भी है, पर वह अभी तक हमारे देखनेमें नहीं आई नाम ही सुनाहै।

तीसरी आक़िलखां की बनाई हुई एक तवारीख है। जो औरंगजेब के अमीरों में से था।

चौथी अमलस्वालह नाम एक और तवारीख है इन दोनों पिछली तवारीखोंमें भी १० वर्ष काही हालहै।

पांचवीं वकाये नामतखांन आली, नाम एक और किताब दक्खन की लड़ाइयों के अखवारों की है।

---

(१) मुसलमान जिस कपड़े को बिछाकर नमाज़ पढ़ते हैं उस को जानमाज कहते हैं। (२) अधिकारी। (३) खिदमतगारों सब कों (४) देखभाल परताल

छटवें 'जंगनामें न्यामतखांन आली' है इसमें भी कुछ हाल औरंगजेब की लड़ाइयों का है जो मारवाड और दक्खनमें हुई थीं।

ऊपर लिखी हुई किताबें तो खास औरंगजेब की ही तवारीख की हैं इनके सिवाय औरंगजेब के पीछे जो कई तवारीखें पिछले बादशाहों की बनीहैं उनमें भी औरंगजेब का हाल लिखा है इस किस्म की किताबों में से एक बखतावरखां की बनाई हुई तवारीख "मिरआतुलआलम" है उसमें भी औरंगजेब का हाल है, मगर १० वर्ष से जियादे का नहीं।

औरंगजेब के और मआसिरआलमगीरी के पीछे की लिखी हुई किताबों में एक अच्छी किताब खाफीखां की है जिसका नाम लुबुततवारीख है। इस में औरंगजेब का जियादा हालहै यह मोहम्मदशाह के राज्य काल में बनी थी और एशियाटिकसोसाइटी के हुक्म से कलकत्ते में छपीहै।

दूसरी मुन्शी जीवनराम की बनाई हुई तवारीख़ मोहम्मदशाही भी उसी जमानेकी है इसमें जो अहवाल औरंगजेब का लिखाहै वह मआसिरआलमगीरी से मिलता हुआ है मगर कुछ कमी के साथ। यह अभी नहीं छपीहै।

तीसरी खुलास्तुल तवारीख मुनशी सुजानरायकी बनाई हुई है इसमें भी औरंगजेब का हाल, है मैंने इस तवारीख की तारीफ़ तो बहुतसुनी है मगर अभी तक देखी नहीं और यह छपी भी नहीं है।

चौथी सियर उल मुत्ताख़ीरीन है। यह १२९ वर्ष पहिले लार्ड हेस्टिंग की हुकूमत में बनी थीं, इसमें औरंगजेब के हालका खुलासा आलमगीरनामें और लुबुततवारीख से लेकर दिया गया है।

पांचवीं तवारीख मुज़फ्फ़री १०० वर्ष पहिले की बनी हुई है इसमें भी औरंगजेब की सलतनत का थोड़ासा अहवाल लिखा मिलताहै।

इनके सिवाय और भी कई छोटी मोटी किताबेंहैं जो हिन्दुस्तान की तवारीख पर बनती रहीहैं और इन में कोई भी औरंगजेब के हाल से खाली नहीं है पर वह हाल ऊपर लिखी हुई किताबों में से ही लिया हुआ है।

यहांतक जो लिखागया वह सिर्फ़ फारसी किताबों के बाबत है इनके पीछे उर्दू की तवारीखें हैं। उनमें भी औरंगजेब का हालहै मगर फारसी या अंगरेजी तवारीखोंसे खुलासा करके लिया हुआ है।

उर्दू तवारिखोंमें दिल्लीके मुन्शी जुकाउल्लाहखां की बनाई हुई किताब बादशाह नामे और आलमगीर नामे में औरंगजेब की अच्छी तवारीख है।

अंगरेजी किताबें जो औरंगजेबकी तवारीख़ पर लिखी गई हैं वह दो प्रकारकी हैं एक तो फारसी तवारीखोंके तरजुमों से बनी हैं और दूसरी औरंगजेब के राजमें आयेहुए योरोपियन मुसाफिरोंके लिखेहुवे सफरनामों से बनाई गई हैं इनमें औरंगजेब का हाल फारसी तवारिखों से कुछ जियादा और अनोखा भी है।

इन फरंगी मुसाफरों में डाकटर बरनियर तो औरंगजेबके बादशाह होने के कुछ पहिले शाहजहांके राजमे आगया था, उसके सफरनामे में इन दोनों बाप बेटोंका हाल है। जिस का तरजुमा फ्रेञ्च भाषासे अंगरेजी और अंगरेजी से उर्दू तथा हिंदी में भी हुआहै।

बरनियरके पीछे डाकटर फ्रायर सन् १६७३ ईसवी (संवत् १७३०) में, पादरी जान ओवेंकटन सन् १६८९ (संवत् १७४२) में, डाकटर जमीली क्रीरी सन् १६९५ (संवत् १७५२) में और मनूकी सन् १७९७ (संवत् १७५४) में आये थे।

इनके सफरनामों में तवारीखी हालातोंका सिलसिला तो थोड़ा ही है मगर दूसरी बातें राजदरबार फौज लशकर आमदनी और लोगों के चाल चलन वगैराकी जियादा हैं, उनमें से भी कुछ २ बातें छांटकर इसतरजुमेंके पीछे शेषसंग्रह के नामसे जोड़ी गई हैं।

इतने पर भी वढ़चढ़कर औरंगजेबके समयके असलकागजोंकी नकलेंहैं जो बहुत परिश्रम औरखर्चसे हाथ आई हैं उनकी भी नकलें शेषसंग्रहमें इस पुस्तक के पढ़नेवालों को मिलेंगी।

उर्दू फारसी और अंगरेजी तवारीखों के सिवाय एक हिंदी तवारीख का नाम औरंगजेबके प्रसंगमें सुनागयाहै जो किसी बुंदेले सरदारने लिखी है और जिसका कुछ हाल औरंगजेब के समय का डयू साहब ने लिखाहै और फिर स्काट साहिब ने उस (बुंदेलेसरदारकी किताब) का तरजुमा भी अंगरेजी में करडाला है। मगर वह हमारे देखनेमें नहीं आया इसलिये डयू साहिब के ही लेख से एक दो जगह कहीं कोई जरूरी बातें लेली गई हैं।

इस तरह से इस पुस्तक के सर्वांग सुशोभित करनेमें जहां तक होसका आलस यां गफ़लतसे कोई परिश्रम उठा नहीं रखा है, पर बहुतसा काम राज का और निज का करने पर भी ५ महीने के अन्दर अन्दर यह मसौदा तैयार करदिया है अब आगे बुद्धि विचक्षण विद्वानों के पसंद आने नहीं आने की बात है । सो उमेद तो है कि पसंद आही जावेगा और न आया तो किसी साहसी सज्जन को इस से अच्छा ग्रन्थ तैयार करने का सौभाग्य मिलेगा । क्यों कि समय अनेक प्रकार की उन्नति के लिये अनुकूल है और एक के पीछे एक और एक से अच्छा एक हमेशे से तयार होता आया है । इसका कुछ परेखा नहीं है ।

तवारीख मोहम्मदशाही के अखीर में मुनशी जीवनरामने कहा है कि "हरेक खण्डहर (टूटा पड़ाहुआ घर) अपने दरवाजे का पता बतलाता है और हरएक पांव का चिन्ह अपने सिरका पता देता है । यह दुनिया (संसार) की एक कहानी है, कुछ तो मैंने कही है और जो बाकी रहगई है उस को दूसरा कहता है ।

अब अख़ीर में इतना कहना और रह गया है कि इस पुस्तक की भाषा विशेष करके उर्दू है जहांगीरनामे की सी हिन्दी नहीं है इस के दो कारण हैं ।

एक तो मित्रवरतिवारी नकछेदीजी ने,जो डुमरांव के प्रसिद्ध कवि और सुलेखक थे, जहांगीरनामे को देख कर मुझे लिखा था कि बादशाहों की तवारीख़ की भाषा में हिन्दी और संस्कृत के ऐसे शब्द ढूंढकर प्रयोग करना विडम्बना से ख़ाली नहीं है ।

दूसरे अभी हिन्दुस्तान और खास करके राजपूताने के लोगों के समझ में आने-वाली यही खड़ी बोली है । इसलिये इस पुस्तक में विशेष करके हिन्दी उर्दू के वेही शब्द रखेगये हैं जो रातदिन बोले जाते हैं और दफ़्दरों और कचहरियों में भी लिखे पढ़े जातेहैं । इन के सिवाय जो तवारीखी शब्द फारसी या अरबी भाषा के जरूरी समझे जाकर लिखने पड़े हैं—उन के अर्थ वहीं ब्रेकेट में या नीचे हाशिये पर लिखदियेगये हैं ॥

विनीत—

देवीप्रसाद

मआसिरआलमगीरी के लेखककी।

मूलभूमिका।
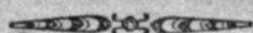
मोहम्मद साकी भूमिका में खुदा और पेगमबर की तारीफ शुरू करके लिखता है कि "खुदाने पैगमबरों को तो गुमराही के जंगलों में भटकने वालों को ईमानदारी के सीधे रास्ते में लाने का हुक्म दिया जिनमें मोहम्मद पैगमबर को सब का सरदार बनाया और बादशाहों को मुसलमानी मजहब फैलाने और काफिरों के अंधाधुंधमतों के मिटानेके लिये पैदा किया, जिन में अरबी पैगमबर के पीछे चलने वाले बादशाह आलमगीर गाजी को सबका सरताज बनाकर तखत पर बैठाया"।

इसके पीछे मआसिरआलमगीरी के लिखनेवाले मोहम्मद साकी ने अपने दिलमें विचार किया कि ४० वर्ष के अखबार तो लिखचुकाहूं अब जो आलमगिर नामा लिखनेवाले मिरजा मोहम्मद कजिम के लिखे हुवे १० वर्ष के अखबार का खुलासा चुनकर अपनी किताब के सिरपर लगादे तो उसका सरनामा भी होजावे और ढूंढने वालों के वास्ते ५० वर्ष की तवारीख मिलने की आसानी भी होजावे।

आरगजब की तवारीख मजहबी रंग में डूबीहुई है वैसेही यह भूमिका भी है। मुसलमान लेखकों का ढंग मालूम होने के लिये हमने आगे भी बहुत जगह तरजमे में असली रंग की झलक दिखलाने की कोशिश की है।

॥ श्रीः ॥

प्रस्तावना।

इस में कोई सन्देह नहीं कि यह ग्रंथ साधारण दृष्टि से पाठकों को अत्यन्त नीरस प्रतीत होगा. क्यों कि इसमें उपन्यासिक ढंगकी चटक मटक और रोचकता नहीं है. परन्तु विचार करने से इसका वास्तविक महत्व भी शीघ्रही चित्त में चढ़ सकता है। पुरातत्त्व वेत्ता, इतिहासप्रिय और स्वदेशहित–आकांक्षी महाशयोंके लिये यह संग्रह साक्षात् एक अमूल्य रत्न है।

स्मरण रहे कि कौरव पाण्डवों में महा युद्ध होतेही इस देश के दुर्दिन दिखाई देने लगगये थे। उसी क्षण से यह संसारशिरोमणि देश अपनी भविष्य अवनति के आगम का ग्रास बन चला था। पुराण प्रसिद्ध महाराज परीक्षित के पुत्र राजा जन्मेजय से कोई इक्कीस पीढ़ी पीछे पाण्डववंशकी राज्यश्रीका सर्वनाश होगया और नागवंशी राजाओं का राज्य हुआ। नागवंश की दश पीढ़ी गुजरने पर अन्ध्रवंश का राज्य हुआ और अन्ध्रवंश के बाद नन्दवंश के हाथ में हिन्दुस्तानका साम्राज्य शासन गया।

जब एक के हाथ से दूसरेके हाथ में राज्य जाता है तब एक प्रकारका भीषण राज्य विप्लव होता है और प्रजा में अराजकता सी फैल जाती है। उस अवस्था में बन्दरों की लड़ाई में बिल्ली को हाथ मारने का मौका मिल जाता है। और यही हुआ भी। जब कि इधर जल्दी जल्दी एक के बाद दूसरे वंशका साम्राज्य स्थापित होता था तभी छोटे छोटे सरदारों को सिर उठाने का मौका मिलता जाता था। अस्तु पश्चिम की सरहद के कई राजा देशी साम्राज्य के शासन से स्वतन्त्र तो होगये परन्तु उनमें इतनी सामर्थ्य न थी कि वे बाहरी हमलों को रोक सकें। परिणाम यह हुआ कि सन् ईस्वीसे ५०० वर्ष पहले फारिसके बादशाह विश्ताश्पके बेटे दारयवुशने सिंधुके किनारे तक अपना दखल जमालिया। कोई दोसौ वर्ष बाद ईरानियोंका सितारा मंदा पड़ा और यूनानने जोर पकड़ा। यूनानके बादशाह जगत्प्रसिद्ध सिकन्दरने फारिसके बादशाह दाराको मारकर फारिस राज्यकी यावत् अमलदारी पर अपना कब्जा करनेकी इच्छासे हिन्दुस्तान में भी पदार्पण

---

(१) नागवंशी राजाओं की राजधानी तक्षकशिला या तक्षशिला नगर बतलाया जाता है। इसी वंश का एक राजा सिकन्दर से मिलकर राजा पुरु के विरुद्ध लड़ने आया था।

किया । उसने सिंधु पार करके झेलम तक धावा मारा । उस समय हिन्दुस्तानका साम्राज्य मुकुट नंदवंशी राजा महानन्दके शीश पर सुशोभित था । उसके पास आठ लाखके लगभग सब सेना थी । क्या जाने उसीके भयसे या अपनी सेनाके मनहार होजानेसे सिकन्दर झेलमसे आगे न बढ़ा, पर स्वदेशको लौटते वक्त पंजाबमें और यथाअवसर सिन्धुके किनारे किनारे कई एक प्रतिनिधि शासकोंको नियत करता गया ।

परंतु घर पहुँचते पहुँचते सिकन्दरका देहान्त होजानेके पश्चात् यूनानियोंका दाना पानी भी हिन्दुस्तानसे उठ गया । इधर नंदवंशके बाद गुप्तवंशका अधिकार बढ़ा । इस वंशने अपना अच्छा प्रभुत्व बढ़ाया, सारे हिन्दुस्तानको मुट्ठीमें करलेनेके सिवाय मध्य एशियातक अपना आतंक जमाया, परन्तु होनहार वश ढाल में बाघ पैदा होगया. गुप्तवंश के आदिराजा चन्द्रगुप्तका पोता अशोक इस देश का चक्रवर्ती महाराज कहाजाता है । उसने हिन्दूधर्म को छोड़कर बौद्ध धर्म को अंगीकार किया । और अपने राज्यभर में बौद्ध धर्मका डंका पीट दिया. परिणाम यह हुआ कि हिन्दुस्तानी लोग जो अब तक केवल राजनैतिक विप्लव के शिकार थे अब धार्मिक प्रतिद्वंदता के फन्दे में भी जकड़े गये ।

धिक् रे देश तेरे दुर्दिन ! न वह चक्रवर्ती महाराज अशोक रहे न वह बौद्ध धर्म रहा । सन् ईस्वी की छठवीं शताब्दी के लगभग इधर श्री स्वामी शंकराचार्य्यजीने वेदमत के उद्धार करनेका बीडा उठाकर बौद्धधर्म को उन्मूल करना आरम्भ किया, उधर अरविस्तान में आखिरी पैगम्बर महम्मद साहब ने दीन इस्लाम का झंडा उठाकर सारे संसार को मुसल्मान बनाना चाहा ।

ये भी न रहे वह भी न रहे, पर सन् ईस्वी की सातवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में, काबुल के मैदान में दोनों के चेलों का मुकाबिला हुआ, उस समय गजनी में यादववंशी राजा गज राज्य करता था, उस पर खुरासान के हाकिम फरीदशाह ने चार लाख सवारों के साथ आक्रमण किया, एक लडाई में राजपूतों की जै रही पर दूसरी में गजने हारकर मुस्लमानी धर्म स्वीकार करलिया । लीजिये उसी समय से मुसल्मानी मजहब के लिये हिन्दुस्तान का दरवाजा खुलगया । सन् ७११ ईस्वी में खलीफा हारूंरशीद के बेटे मामूरशीद ने कश्मीर और सिन्ध पर दीन इस्लाम की दुहाई फेर

दी। इस के बाद सन् १०१० से १०२४ ई० तक महमूद गजनवीने २४ हमले हिन्दुस्तान पर किये जिन में उस ने काशी तक दीन ईस्लाम की दुहाई फेरी और लाखों हिन्दुओं को लूट मार कर देश को तहसनहस कर दिया।

इस के बाद मुस्लमानी सितारा कुछ दिनों के लिये मंद सा पड़ा और हिन्दुओं ने जोर पकड़ा। सिन्ध और पंजाब की सरहद से सम्बन्ध रखनेवाले दिल्ली अजमेर और कन्नौज के राजाओं ने परस्पर संधि बन्धन करके यह निश्चय करलिया कि अब धर्मशत्रु मुस्लमान लोग पंजाबसे आगे न बढ़ने पावें,परन्तु दीन इस्लाम का वह किंचित् मन्दापन ऐसा ही था जैसे तेल डालते समय दिया की ज्योति मन्दी पड़ती है। एक शताब्दी गत होते होते उस का ऐसा प्रखर प्रकाश हुआ कि यदि इस ग्रन्थका चारित नायक अदूरदर्शी औरंगजेब रूपी पतिंगा स्वार्थरूपी प्रेमपाश में पडकर समाज सहित भस्म होने का साहस न करता तो इस समय उसी जाज्वल्यमान ज्योति के उजेले में हम आप ही अपनी स्वतन्त्रता का रास्ता पा लेते। सीधी बात तो यह है कि न हाथ की बिल्ली जाती न मेंऔं मेंऔं करना पड़ता।

जब बुरे दिन आते हैं तो मनुष्य के गुण भी अवगुण होकर उस के कालस्वरूप होजाते हैं। हा! स्मरणमात्र से हृदय विदीर्ण होता है! इस देश का अन्तिम हिन्दूसम्राट् चहुआणवंशावतंस शूरशिरोमणि राजा पृथ्वीराज मानो इस देशकी श्री और ह्री का अन्तिम नमूना था। निस्सन्देह वह जैसा स्वरूपवान् बलवान् गुणवान् धर्मवान् और यशस्वी था वैसा ही नीतिकुशल भी था, किन्तु केवल दूरदार्शिता की कमी होने से पुरानी लकीर का फकीर बनकर जैसे उस ने हिन्दुओं की नाव डुबोई उसी तरह से आलमगीर औरंगजेब ने मुस्लमानी सल्तनत खोई।

पृथ्वीराज को पकड़ लेजाने के पश्चात् गजनी का शाह शहाबुद्दीन गोरी भी शीघ्र ही गोर में गड़गया। इधर उस के प्रतिनिधि शासक कुतबुद्दीन ने कन्नौज को फतह करके गंगा पार होना चाहा, पर तबतक वह भी चलबसा। उस के बाद अलतिमश खिलजी तुग़लक़ लोदी बहमनी सूर आदि कई एक मुस्लमानवंश दस दस पांच पांच वर्षके लिये हिन्दुस्तान का साम्राज्य करके नाश होते गये। अन्तमें मुगलसाम्राज्य का मूल बाबर आया और उस ने यहां मुगलवंशका पौधा जमाया. इस मुगलवंश ने तीन सौ वर्ष पर्य्यन्त अखंड राज्य किया अन्त में औरंगजेब ने उसे भी जड़ से खोदिया

इस ग्रन्थ के प्रथम और द्वितीय खण्डों में मुगलवंश की पूर्व व्यवस्था का वर्णन है अत एव जिस देश के सम्बन्ध में हमें उस भिन्न जातीय भिन्नधर्मावलम्बी मुगल-वंशकी आद्योपान्त व्यवस्था का जानना आवश्यक हुआ है उस देशकी पूर्व व्यवस्था का विचित्र परिचय देना आवश्यक समझकर उपरोक्त घटनाशैली को सूक्ष्म रूप से प्रकाशित किया गया है। अब हम इस ग्रंथके चरित नायक औरंगजेबके उन पूर्व पुरुषोंका भी किंचित परिचय दिया चाहते हैं जिन्होंने हिन्दुस्तान में मुगल साम्राज्यकी जड़ जमाई, क्यों कि इस ग्रंथके पढने में तभी आपको आनन्द आवेगा और आप समझ भी सकेंगे कि औरंगजेबने अपने बाप दादोंकी कमाई किस तरह और क्योंकर गमाई अथवा हिन्दुस्तानमें किस तरह की शासनप्रणाली से राज्य स्थिर रह सकता है और स्थितराज्य उन्मूल होसकता है तो किस तरह से?

मुगल वंशके मूल पुरुषसे लेकर बाबरके पिता तक का हाल आप इस ग्रंथ-के प्रथम और दूसरे खंडोंमें पढेंगे। बाबरका जन्म सन् १४८२ में हुआ था। जिस समय इसके पिता शेख उमरका देहान्त हुआ उस समय इसकी अवस्था केवल १२ वर्षकी थी। उमर शेख मिरजाने मरते समय अपना सारा राज्य बराबर तीन हिस्सोंमें बांट दिया था। बाबरकी बैठक (राजधानी) कोहकनमें थी और काबुल और कन्दहार उस की राजधानी के सूबे थे। पिताके मरने पर इसके पांच वर्ष बड़े अमन चैन से कटे। इसके बाद समरकंद के मालिक ने इस की राजधानीको आघेरा। बहुत दिनोंतक लड़ाई होनेके पश्चात् एक दिन रात्रिको बाबर किलेसे निकल भागा और राज्य पर समरकंदियोंका कब्जा होगया। वहाँसे भागकर बाबरने अपने एक पुराने मित्र की शरण ली जिस की सहायतासे उसने समरकंदियोंका थाना उठाकर फिरसे अपना राज्य पालिया.परंतु अबकी बार उसके भाइयोंने ही उस पर आक्रमण किया। उन्हों ने खूब खून खराबा कर के राज्य पर आधिपत्य जमाने के सिवाय बाबरको इस संसार सेही विदा करदेना चाहा। इस अवस्था में बाबरके कुछ दिन बड़े दुःख में कटे यहाँतक कि शिरपर दुपट्टा नहीं पैरमें जूता नहीं फिर रोटी के टुकड़े और पानी के प्याले की कौन कहे।

परंतु "सबहि दिन नहीं बराबर जात" कालान्तर से बाबर के वे दुर्दिन शीघ्रही दूर होगये और उस ने 'येन केन प्रकारेण' अपना राज्य पालिया। केवल यही नहीं उस

ने काबुल कन्दाहार गजनी बदखशां आदिको ताबे में कर के हिन्दुस्तान की सरहद तक अपना आतंक जमा लिया और यथाअवसर हिन्दुस्तान जैसे सुविस्त्रित भूभाग परभी अपनी भविष्य संतानके साम्राज्यका बीज बो दिया ।

स्मरण रहे कि कुतबुद्दीन ऐवक से लेकर अलाउद्दीन खिलजी तक जितने बादशाह दिल्लीके तख्तपर बैठे उनमें से कोई भी पूरब में जौनपूर और दक्षिण में अहमदनगर से आगे नहीं बढ़े । सिर्फ गुजरात की तरफ दौड़ धूप करते रहे । अलाउद्दीनने सन् ११९४ई. में दक्षिण देश विजय किया. उस के बाद बंगाल और फिर सन् १३०३ में उस ने राजपूताने के कई एक छोटे २ सरदारोंको लूटते मारते हुए चित्तौड़का किला फतह किया । तात्पर्य यह कि सन् ईस्वीके चौदहवीं शताब्दीके आरंभमें सारे हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की धाक बँध गई । परंतु अलाउद्दीनका बेटा सपूत न निकला ।

अलाउद्दीन के बाद ही दिल्ली की सल्तनत पूर्व अवस्था को पहुँच गई। जो जहाँ थे सो तहाँ के स्वतन्त्र शासक बन बैठे और दिल्ली में एक के बाद दूसरे वंश बारी बारी से राज्यकरने लगे। जिस समय जहीरुद्दीन महम्मद बाबर काबुलका बादशाह था उस समय इब्राहीम लोदी दिल्ली का बादशाह था। इब्राहीम का चचा दौलत खाँ लोदी बगावत ठान कर पंजाब के पहाड़ोंमें चला गया था, उसीने बाबर को अपनी सहायता के लिये बुलाया था ।

यहाँ तो वह मसल हुई कि बुलाया था मक्खी हाँकने को सो साथ खाने लगे। साथ क्या खानेलगे मय थाली चाट गये" बाबर ने पंजाबकी सरहदमें पैर देतेही क्या हिन्दू क्या मुसल्मान वहाँ के सब छोटे छोटे सरदारों पर आतंक जमाना शुरू किया और उन्हें अपना पक्षपाती बनालिया । इसप्रकार अपने दल को पुष्ट करके उसने पहिले दौलतखाँ की ही खबर ली । बादको दिल्लीपर आक्रमण किया । बाबर को सामने आया हुआ देखकर इब्राहीम कोईएक लाख सेना साथ लेकर उस से भिड़ा पर आप स्वयं इस लडाईमें मारागया । मालिकके मरते ही सब फौज तीन तेरह होगई और बाबरने चढ़ी सवारी दिल्लीपर अपना दखल जमालिया । यह लडाई सन् १५२६ई. में हुई थी.

अब अफगान लोगों की आँखें खुलीं और उन्होंने विदेशी शत्रु को मार निकालने की इच्छा से मेवाड़ के महाराणा संग्राम सिंहजी की शरण ली । बाबर ने भी त्रि-

चारा कि जबतक प्रबल राजपूतों के दाँत खट्टे नहीं किये तबतक दिल्ली की बादशाहत मिली न मिली बराबर है, इस हेतु वह भी लड़ने को तैयार हुआ सन् १५२६ ई० में आगरे के पास सिकरी के मैदान में लड़ाई हुई। दुर्भाग्य वश लड़ाई की चाल चूक जाने से मेवाड़पति को परास्त होना पड़ा और बाबर ने विजय पाई। इस विजय के पश्चात् बाबर के नाम का हिन्दुस्तान भर में आतंक जमगया।

तत्पश्चात् बाबर तो दिल्ली में रहकर भारतवर्ष में अपनी सल्तनत अटल करने के उपाय करने लगा और उसका ज्येष्ठ पुत्र हुमायू दिग्विजयके लिये निकला। उसने गुजरातके हाकिम बहादुरशाह को शिकस्त देकर वहां अपना दखल जमाया। फिर जौनपूरसे लेकर विहार और बंगालको भी फतह किया, तबतक सन् १५३० ई०में बाबरका देहान्त होगया। इस घटनासे मुगल साम्राज्य फिर कमजोर पड़ गया। उधर बहादुरशाह भी बदल खड़ा हुआ इधर बंगालमें शेर शाहसूरने बंगालको अपने ताबेमें करके जौनपूरके जिलेपर दखल जमाते हुंये चुनारके किलेमें थाना रोप दिया. यह देख कर बाबरने उसे दिल्ली तक बढने देना उचित न समझकर चुनारके किलेपर आक्रमण किया। हुमायूको वहां गले हाथ बिजय मिली इस लिये वह शेरशाहके शासनको नेश्तनाबूद करने क लिये और भी आगे बढ़ा पर ज्योंहीं वह मध्य बंगालमें पहुँचा कि शेरशाहने फिरसे उसे आघेरा और चारो ओरसे रसद पहुँचना बंद करके उसने मुगलसेनाको अन्न पानीके लिये मुहताज कर दिया।

इस आपत्ति से आक्रांत होकर हुमायू आगरेको लौटने के लिये विवश हुआ। शेरशाहने उसे वहांसे तो चले आने दिया पर ज्योंही मुगलसेना गंगाके किनारे बक्सरके पास पहुंची कि अफगानों ने सामने आ ललकारा। हुमायू ने मुकाबिला किया पर मुगल सैनिकों के मनहार होने के कारण उसे हारखानी पड़ी। वहां से भागकर हुमायू कन्नौज तक पहुंचने पाया था कि फिरसे सूरसेना ने उसे आ दबाया। यह बात सन् १५३९ ई० की है। कन्नौज की लड़ाई में तो हुमायू इस तरह से हारा कि उसे प्राण बचाना कठिन होगया फिर राज्य काज की बात कौन कहे।

धन्य करमके फेर! समस्त हिन्दुस्तानको अपने अधिकार में करने के लालसी बाबर के पुत्र हुमायूको आज हम सिंध के मैदान में असहाय फिरता देखते हैं मियाँ बीबी दो और दो चार सच्चे बफादार दोस्त उनके साथ में हैं—पर अवस्था यह

है कि रोटी है तो पानी नहीं, पानी है तो रोटी नहीं। इसी अवस्था में अमर कोट के पास हुमायूं की बीबी ने (सन् १५४२) में एक बच्चा जना। कालान्तर से वही बच्चा शहंशाह जलालुद्दीन महम्मद अकबर के नाम से हिन्दुस्तान के तख्तपर एक जगत्प्रसिद्ध बादशाह हुआ। उसी अवस्थामें अपनी प्रसूता बीबी और दुधमुंहे बच्चेको लियेहुए हुमायू फारिस (Persia) के बादशाह तहमासाशाह की शरण में गया। तहमास्पशाह ने हुमायूं को सादर आश्रय दिया और उस की यथोचित सहायता भी की। हुमायू ने फारिस के सेनापति बैरमखान की सहायता से पहले काबुलपर आक्रमण किया और अपने स्वतंत्र एवं स्वेच्छाचारी भाइयों को दमन करके अपने पैतृक राज्यका अधिकार प्राप्त किया।

इधर सन् १५४५ ई० में शेरशाह सूर कालिंजर के किले की लड़ाई में मारा-गया। और उसका बेटा सिकन्दरसूर तख्तपर बैठा, पर उस के विषयविलासिता में लिप्त होनेसे शीघ्र ही राज्य श्री ने उस से बिदा ली। बंगाल निवासी एक हेमूनामक बनिया जहां तहां देश दबाकर बलवान् होगया। इसी अवसर में हुमायूको पुनः हिन्दुस्तानपर आक्रमण करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ। उसने सन् १५५५ ई० में सिंधपार करके सरहिन्द के पास सिकन्दरसूरको परास्त किया और चढ़ी सवारी दिल्ली और आगरे पर दखल जमालिया।

अभी छैः महीने भी नहीं हुए थे की हुमायूं इस संसार से चल बसा, मानो वह अकबरको हिन्दुस्तान के तख्त तक पहुंचाने के लिये ही आया था। उस समय अकबर की उमर केवल तेरह वर्ष की थी, अस्तु हेमू ने उसे नाबालिग जानकर पंजाब प्रान्तपर दखल जमातेहुए दिल्लीपर आक्रमण करना चाहा परंतु बुद्धिमान बैरमने उसे पानीपत के मैदान में जालिया। जिस तरह नवाब सिराजुद्दौलाको परास्त करने से अंग्रेजों की अमलदारी जमगई उसी तरह बैरमको पकड़ लेने से मुगल राज्य की नींव हिंदुस्तान में मजबूत हो गई।

परस्परका प्रेम नेम या व्यवहार तभीतक निभता है जबतक एक दूसरे के अधिकारोंपर अनुचित हस्ताक्षेप न करें। इस के विरुद्ध हो ते ही, राजा प्रजा और अफसर मातहत की कौन कहे बाप बेटे की भी नहीं बनती। अस्तु बैरमखां ने

अकबरको लड़का समझकर समस्त राज्य पर इच्छानुसार शासन किया चाहता था, इधर अकबर भी अब अपना बैभव प्रकाशित करना चाहता था। इसी में दोनों की अनबन होगई। सौभाग्यवश उसी समय अकबर को शेरशाह सूर के दो पुराने मुसाहब मिलगये, वे दोनों अब्बुलफजल और राजा टोडरमल हैं। इन्हीं दोनों की सहायता से अकबरने समस्त राज्य शासनका भार अपने हाथ में ले लिया और बैरमको पिन्सन देकर मक्केको रवाना किया।

बुन्देलखंड अन्तर्गत रयासत बिजावरके पास पाटन गांवका रहनेवाला बीरन नामका एक ब्राह्मण भी अकबरके दरबारमें जा पहुंचा। वही तवारीखमें बीरबलके नाम से प्रसिद्ध है। राजा टोडरमल लखनऊ जिलेके रहनेवाले जातिके खत्री थे और अबुलफजल एक सिंधी गृहस्थके लड़के थे। अबुलफजल और टोडरमल शेरशाह सूरकी पेशीमें काम कर चुके थे। अस्तु वे दोनों तो राज्यके एक एक महकमें के मालिक हुए—अबुलफजल वजीर हुआ और राजा टोडर मालके महकमें के मालिक हुए—और बीरबल अकबरके अंतरंग मित्र वा प्राइवेट सेक्रेटरी थे। इन तीनों बुद्धिमान व्यक्तियोंकी सहायतासे अकबर के राज्य शासनका सूर्य्य ऐसा प्रकाशमान् हुआ कि सैकड़ों वर्ष बाद अब भी अंग्रेज लोग उसके सहारे हिन्दुस्तानका शासन कर रहे हैं, पर खेदहै कि मदान्ध या मतान्ध औरंगजेब उस प्रकाश से बिलकुल ही वंचित रहा।

एक अंग्रेज लेखकका यह वाक्य बहुत ही महत्व पूर्ण है कि (Man is an instrument of Devine-wisdom) मनुष्य ईश्वरेच्छाके पूर्ण करनेका एक औजार है। और तभी यह नियम है कि पूर्व संचित कर्म्मानुसार जो जैसे स्वभावका होता है उसे वैसे ही यार दोस्त या अनुचर वर्ग मिलजाते हैं। अकबर के राज्यकालमें जो कुछ हुआ वह सब उक्त चौकड़ीकी करतूत समझिये। राजा टोडर मल और अबुलफजलके जो मंतव्य शेरशाह सूरकी अकाल मृत्युके कारण अधूरे रह गए थे उन्हें उन्होंने अकबर के द्वारा पूर्ण किया। परन्तु अकबर के हिन्दुओं में पूज्य होजाने का कारण बीरबल थे। अबुलफजल और टोडरमल यदि यह निश्चय करते कि अमुक व्यवसाय से राज्यश्री की वृद्धि होगी तो बीरबल यह बतलाते

कि वह इस प्रकार से पूरा पड़सकैगा अथवा स्वयं उस को कर दिखाता था । इसी लिये अकबर के राज्यकाल में बीरबल के नाम ने सर्वोच्चासन पाया। बिचारने की बात है कि अलाउद्दीन खिलजी, गयासुद्दीन बलबन, शेरसाहसूर और बाबर आदि कई बादशाह सहस्त्र चेष्टा करनेपर भी जिस राजनैतिक चाल को पूरा न करसके उसे अकबर ने हँसते खेलते करलिया। किस के बल से? बीरबल के बल से!

ऊपर कहेहुए चारों बादशाह इस बात को समझते थे कि जबतक राजपूताने के राजपूतों को अपने पंजे में नहीं करलिया, तबतक मुसलमानी बादशाहतका जमना कठिन है क्योंकि साम्राज्यवंशीय सदस्य जो दूर देश में शासन-अधिकार पाकर बागी होजाते हैं और सल्तनत की जड़ पर आघात करके उसे उन्मूल करदेते हैं उन्हें दबा रखने के लिये राजपूत राजाओं की बड़ी जरूरत है। इस के सिवाय इस बातका भी भय था कि परस्पर की हाथाबाही में शायद एक दिन वह समय न आवै कि मुसलमानी राज्य हिन्दुस्तान से समूल उन्मूल होजावे और यही राजपूत राजा साम्राज्य लेलेवें। इन बातों को जानते सब थे पर कोई कुछ कर नहीं सके थे। अकबर ने महाराज मान के साथ मित्रता करके शनैः शनैः सब राजपूत राजाओं को पालतू तोता बना लिया। क्यों न हो उस ने राजपूत जाति के स्वभावका परिचय पालिया था।

अकबर सन् १५५६ ईस्वी में गद्दी पर बैठा था। उस ने ११ वर्ष के अर्से में सन् १५६७ तक जैपूर जोधपूर आदि के बड़े २ राजाओं को सम्बन्ध बन्धन में बांध पाया. तब उस ने सुदूरवर्ती देशों को विजय करने के लिये कदम बढ़ाया। ईश्वर की कृपावत् अपने प्रताप एवं राजनीति के बल से उसने अपने भक्षक राजपूतों को ही अपना रक्षक बनाकर पहले गुजरात पर हमला किया। वहाँ अपना अधिकार स्थापित कर के उस ने बंगाल बिहार दक्षिण आदि देशोंपर भी अपनी दुहाई फेर दी। इस प्रकार से समस्त हिन्दुस्तानको अपने कबजे में कर के उसने उत्तर की तरफ उत्तरीय हिन्दुस्तान और काबुलको अपने कब्जे में किया. इन्हीं लड़ाइयों में राजा बीरबल मारेगये।

स्थानाभाव के कारण हम अकबर के शासन प्रणाली की और उस की चाल-चलन की आलोचना नहीं कर सकते पर इतना फिर भी कहेंगे कि वह एक बड़ा दूरदर्शी और नीतिज्ञ पुरुष था। यदि उस के उत्तराधिकारी ठीक इसी की रीति

नीतिका अवलम्बन करते ता आज दिन हिन्दुस्तान में मुसल्मानों की आबादी बारह करोड़ से कहीं ऊपर होती और हिन्दू मुसल्मानों में केवल उतना ही भेद बाकी होता जितना कि शैव और वैष्णवों में अथवा जैन और हिन्दुओं में है।

अकबरका देहान्त सन् १६०५ ई० में हुआ उस के पश्चात् उसका जेष्ठ पुत्र जहाँगीर तख्तपर बैठा। उसने यावज्जीवन अपने बाप की रीति को अच्छी तरह से निबाहा। उसने मुगलराज्य की सीमांको गतकालसे भी कुछ अधिक बढ़ाया और इसी लिये उसे अंग्रेज लोग "दी ग्रेट मुगल एमपरर" (The jreat Moghal Emperow) लिखते हैं, पर उसके समय में ऐसी कोई विशेष घटना नहीं हुई जो इस प्रकरण में प्रयोजनीय समझी जा सके। जहांगीर सन् १६२७ ईस्वी में स्वर्गवासी हुआ और उस का मझला पुत्र शाहजह सिंहासन पर बैठा. इसने भी बाप दादे की अच्छी निबाही। इस के समय में राजदरबार की बाहरी बातें सब ठीक थीं, पर इस के हृदयपर विषयविलासिता के पूर्ण अधिकार करलेने से इस का अन्तरंग जीवन अत्यन्त कलुषित कहाजाता है।

यह विचार लेना बड़ी भूलहै कि अन्तरंग बातोंसे और बाहिरी व्यवहारोंसे क्या संबन्ध है। जैसे जरा सी पारे की खाक रोम रोम से फूट निकलती है वैसे ही मनुष्य के दुष्कर्म वहां तक सर्वत्र सर्वनाश करते हैं जहाँ तक कि उसका संबन्ध हो। स्मरण रहे कि औरंगजेब एक पवित्रात्मा और उद्दंड पुरुष था और पिता के व्यवहारों से ही चिढ़कर ही कठोर नीति का अवलम्बन कियाथा।

औरंगजेब हमारा धर्म--शत्रु था इसी हेतु से हम उसे नीच,नराधम,दुष्ट आदि चाहे जिन अपशब्दों से संबोधन करें पर न्यायबुद्धि से यही कहना पड़ेगा कि वह एक उद्दण्ड और पवित्रात्मा पुरुष था। माना कि उसने भाइयों को धोखा दिया लड़के को मरवा डाला; पर किस लिये ? केवल अपने स्वत्व और अधिकारों की रक्षा के लिये। फिर भी उसका राजसी अधिकारों पर अधिकृत रहना राजश्री के सुख उपयोग करने के लिये नहीं था बरन् अपने पैगम्बरों की आज्ञाओं के निर्वाह करने के लिये था। माना कि हिन्दुस्थान के तख्त पर बैठकर अरब में पैदा हुए नबी की आज्ञानुसार

कार्य्य करना उस की भूलथी पर भूल से काम करने वाला ईश्वर के यहां भी क्षमा पाताहै फिर हमारी मानव समाज में क्यों उसका अनुकरन न किया जाय।

औरंगजेब के विषयमें विशेष कहना सुनना व्यर्थ है क्यों कि जब उस का रोजनामचा ही आपके सामने पेश है तो आप उसकी रीति नीति की आलोचना स्वयं कर सकतेहैं।

हमें विशेष आनंद इसबातका है कि अकबर से लेकर शाहजहां तक सब का श्रेणी बद्ध इतिहास प्रकाशित होचुका है पर औरंगजेब की तवारीख अब तक नहीं मिली थी सो महाशय मुन्शी जी ने उसे भी हिन्दी में अनुवाद कर के मुगलवंशकी तवारीखका मसाला पूरा कर दिया।

यथानुमान इस ग्रंथको पढ़कर अंतमें आपको यही कहना पड़ेगा

दोहा—होनहार होनी प्रबल, हानी होय सु होय।
दोष न काहू दीजिये, भलो बुरो नहिं कोय॥
हौनहार होतव्यता, तैसी मिलै सहाय।
कै लैआवै ताहिको, कि ताहि वहां लेजास॥

मुम्बई
१४ अप्रैल सन् १९०९ ई.

लेखक—
कुँअर कन्हैयाजू.

॥ श्रीः ॥

मुग़ल बादशाह

(१) खण्ड.

मुग़लोंकी पीढ़ियाँ आदम।

अब से ७००० बर्ष पहिले आदम ईश्वरेच्छासे बगैर मा बापके पेदाहुए उस समय मकर लग्न था। शनि मकरमें, बृहस्पति मीनमें, मंगल मेषमें, चन्द्रमा सिंहमें, सूर्य्य बुध कन्यामें और शुक्र तुलामें थे। आदमका क़द ६० गज ऊंचा था फिर ईश्वर ने उनकी बांई पंसली से हव्वा को पैदा करके मर्द औरत का जोड़ा मिलाया इनके २१ लड़के और २० लड़कियां हुईं। फिर उनकी भी औलाद बढ़ी यहाँतक कि आदम के मरनेके समय उन की सन्तान में पुत्र प्रपौत्र सब मिलकर ४०००० होगये थे।

आदम हिन्दुस्तान में मरे। और सरंदीप (सिंहलद्वीप) के पहाड़ पर गाड़े गये जहाँ आदम गाड़े गए उस भूमि की कदमगाहआदम (आदमके चरणों) के नामसे जियारत होती है आदम के पीछे हव्वा मरीं।

शीस।

आदम के हव्वा में दोदो बालक एक एक गर्भ से होते थे एक लड़का और एक लड़की। फिर उनका आपस में विवाह करदिया जाता। बड़ा बेटा हाबील था। उसको छोटे भाई क़ाबील ने मारडाला तब शीस अकेला जन्मा। आदम ने अपनी १००० वर्षकी उमर होजाने पर इसीको अपना वलीअहद युवराज बनाया आदम के पीछे यही उसकी जगह पर बैठाया गया यह शाम देश में रहा करता था और विद्याका पहिला आचार्य हुआ यह ९१२ वर्ष का होकर मरा।

अनूश।

शीस की ६०० वर्ष की अवस्था होने पर उसका पुत्र अनूश पैदा हुआ और यह ६०० वर्ष जिया। मगर यहूद और नूसारा (मूसाई और ईसाई) इसकी उमर ९६५ वर्ष की बतलाते हैं—इसने बादशाहीकी रीति चलाई।

क़ेनान ।

केनान अपने सब भाइयों में लायक था । इसने बाबुल और सूस दो शहर बसाए । बाग और मकान बनाने की तरकीबें निकालीं । इसके वक्त में आदमी बहुत बढगये थे इसने उन सब को दूर दूर भेजा और आप शीसकी औलाद समेत बाबुलमें रहा । उसकी उमर कोई ९२६ वर्ष की और कोई ६४० वर्ष की बतलाते हैं ।

महलाईल ।

केनान के पीछे उसका वली अहद महलाईल गद्दी पर बैठा वह ९२६ वर्ष जिया. या ८४० या ८९९.

यर्द (वर्द)

यर्द महलाईल के बेटों में सब से अच्छा था । बाप के हुक्म से बादशाह होकर इस ने नहरें और नदियां निकालीं इसकी उमर कोई ९०२ और कोई ९६७ बताते हैं ये सब यहां तक आदम की जिंदगीमें पैदाहुए थे ।

अख़नूख ।

इस को इद्रीस भी कहते हैं । यह यर्द का बड़ा बेटा था । यह आदम के मरने के पीछे पैदा हुआ था । परन्तु कोई कहते हैं कि यह आदम की जिंदगी में ही १०० वर्ष का होगया था और कोई कहते हैं कि ६० वर्ष का था । इसने मिश्र देश के एक गारीमन विद्वाननामक विद्वान से हिकमत सीखी । और लिखने, कातने, बुनने, और सीने आदि की कारीगरी चलाई । ज्योतिष विद्या निकाली लोगोंको सूर्य की सेवा सिखाई जिस की राशि बदलने पर उत्सव करता था । कानून बनाये ७२ भाषाओं में ईश्वराराधना का उपदेश किया, १०० शहर बसाये, मिश्र में बड़े २ गुबद अहराम के नामसे बनाये जिनमें तमाम कारीगरियों के नमूने और औज़ारों के नकशे हैं कि जो कोई भूलजाये तो उनमें देखले । इसकी उमर मरने के वक्त किसीने ८६५ किसी ने ४०५ और किसीने ३६५ वर्ष की लिखी है ।

मतूशलख़ ।

अखनूख के बहुत बेटे थे जिन की गिनती मुशकिल से होती थी । उनमें से "मतूशलख" बाप की जगह बैठा । जब यह ९०० वर्ष का हुआ तब इसको एक बेटा जन्मा जिसका नाम लमक रक्खा गया उसके पीछे २९० वर्ष और जिया ।

लमक।

बाप के पीछे गद्दी पर बैठा और ७८० वर्ष जिया।

नूहपैगंबर।

लमक का बेटा था। जब आदम को मरे हुए १२६ वर्ष होगये थे तब सिंह लग्न में पैदा हुआ। उस के समय में आदमी बहुत पापी होगये थे इसलिये पानी का तूफान आया और दुनिया सब उस में डूबगई। नूह और ८० आदमी १ नाव में बैठकर बचे। मगर हिन्दुस्तानकी किताबों में जो कई हजार वर्षों की लिखी हैं इस तूफान (प्रलय) का जिक्र नहीं है।

कुछ दिनों पीछे उन ८० आदमियों में से भी ७ ही जीते बचे १ नूह और ३ उसके बेटे याफत, साम, और हाम और उन तीनों की तीन औरतें।

नूह ने शाम ईरान और खुरासानका राज्य साम को दिया हबश सिंध हिन्द और सोदान का हाम को और चीनसकलाब और तुर्किस्तानका राज्य याफत को दिया। अब तवारीख वालों के मत से तमाम दुनिया के आदमी इन्हीं तीनों की औलाद में हैं।

फिर नूह १६०० और कईलोगों के मत से १३०० वर्ष का होकर मरा। ९५० वर्ष तक उसका राज्य रहा था।

हाम।

हाम के हिन्द, सिन्ध, ज़ंज़, नूबा, किनआन, कोश, किब्र, बरबर, और हबश नौ बेटे हुवे परन्तु कोई ६ ही बतलाते हैं। सिन्ध और किनआन का नाम नहीं लेते और नूबे को हबश का बेटा बतलाते हैं।

साम।

साम के भी ९ बेटे थे। १ अर्फखशद २ क्यूमुर्स जो ईरान के बादशाहों का मूलपुरुष था ३ असवाद जिसके बेटे अहवाज़ और पहलव और पहलव का बेटा फास्स; फ़ारस ४ अरान जिस के बेटे साम और रूम ५ बूरज ६ लाउज़ जिस के

वंश में मिश्रदेश के फ़रऊंन बादशाह थे ७ ईलम जिसने खोज़िस्तान बसाया। खुरासान और तंबाल उसके बेटे थे। खुरासानका बेटा इराक़ तंबालके बेटे किरमान और मक्रान हुवे ८ इरम जिससे आद जाति के लोग हुवे ९ बूज़र जिसके बेटे आज़ाबीयजा, आरान, अरपन और फ़रग़ान थे।

कई लोगों ने साम के केवल ६ बेटे बतलाये हैं। क्यूमुर्स बूरज़ और लाऊज़ का नामही नहीं लिया है।

याफ़त।

नूह ने याफत को पानी बरसानेवाला १ पत्थर * देकर उत्तर और पूर्व में भेजा। पूर्व और तुर्किस्थान की सब तुर्क जाति के खान उसीकी औलाद में से हैं और इसीलिये उस को तुर्कों का मूलपुरुष कहते हैं। कई तवारीख लिखने वाले अलोनजा खां भी उसी को बतलाते हैं जिसको तुर्क लोग अपना मूलपुरुष मानते हैं।

याफत के ११ बेटे तुर्कचीन, सक्लाब, मनसज, (मनसक) कुमारी (केमाल खिलज) खिज़र रूस, सदसान, ग़ज़, और यारज हुए। कई किताबों में आठही लिखे हैं। खिलज, सबसान, और ग़ज़ का नाम नहीं है।

तुर्क।

यह बाप के पीछे सीलोल (सलीकाय) नाम एक अच्छी जगहमें रहा। जहां पानी जंगल और चारा बहुत था इसने घास और लकड़ी के घर और जनावरों की खालों के कपड़े तथा डेरे बनाये। उसने बेटा को १ तलवार और बेटी को सब घरबार देने का क़ानून चलाया। वह २४० वर्ष जिया। ईरान का बादशाह क्यूमुर्स उसके जमानेमें था।

---

* इस पत्थर को तुर्क जदातांश फारसी यदा और अरब हजरुलमतर अर्थात् पानी का पत्थर कहते थे उसमें पानी बरसाने का गुण था जिसकी तरकीब तुर्क लोग ही जानते थे।

१ सरदार।

अलंजाखान।

तुर्क के बेटों में अलंजा ख़ां सब से अच्छा था वह उस की जगह बैठा। उसके पीछे उस का बेटा दीब बाकूय, और दीब बाकूय के पीछे क्यूक खां उस का बेटा राजा हुआ। फिर उस की जगह उस का बेटा अलंजाखां बैठा। उस के २ जोड़ले बेटे मुग़ल और तातार हुए जिन के बड़े होने पर उस ने अपना मुल्क दोनों को बांट दिया और मरते वक्त आपस में मेल मिलाप रखने को कहा। तातारके वंश में ८ घराने हुवे और मुग़ल के ९ जिस से वे लोग ९ के अंक को बहुत मुबारक (शुभ) समझते थे।

मुग़लखान।

मुग़ल के ४ बेटे क़राख़ान, आजरखान् करा खान् और एरजखानथे।

क़राखान।

यह क़रा कुरमदेशमें अर्ताक़ और करताक नामक दो पहाड़ों के बीच में रह करता था।

अगूरखान।

यह क़राख़ानकी बडी बेगम का बेटा था इसने ईरान तूरान,रूम,मिश्र,शाम, और फरंगदेश फतह करके अपने राजमें मिलाये और पहिचान के वास्ते तुर्कोंके अलग अलग नाम रक्खे जो आजतक चलेआतेहैं जैसे एगूर क़नग़ली कबचाक कारलीग़ और खलज वगैरह।

उसके कुन, आई, यलदोज, कूक, ताक और तंगीज नामसे छ बेटे थे जिनकी औलादमें तुर्कों की २४शाखायें हुई क्योंकि एकएकके ४।४ बेटे हुएथे। इनमें से जो ईरान में जाकर बसे और वहां उन की औलाद हुई उस का नाम ताजीकों (ईरानियों) ने तुर्कमान रखदिया अर्थात् तुर्क जैसे तुर्कमान नाम पुराना नहीं था कोई

---

१ खां और खान तुरकी बोली में बादशाह और सरदार का नाम है तुर्क और मुग़ल जाति के बादशाह कदीम से खान कहलाते रहे हैं आजकल यह समझाजाताहै कि पठान ही खान कहलातेहैं और यह ख़िताब पठानों का ही है परन्तु इसमें भूल है क्योंकि खान का ख़िताब पठानों में पहिले नहीं था मुगल बादशाहों से उनको मिला है।

कोई तुर्कमान जाति ही को जुदा बताते हैं और कहते हैं कि उन का तुर्कों से कुछ लगाव नहीं है ।

कहते हैं कि जब आगूर खां दुनियां में दिग्विजय करके अप ने घर आया तो एक बड़ा दरबार करके उसने अपने बेटों अमीरों और सब नौकरों को बखशिसों से निहाल करदिया । उसने दहने हाथ की (बैठक जिस को तुर्क बुरुनग़ार कहते हैं) और वलीअहदी बड़े बेटे और उस की औलाद में रक्खी और जुरनगार यानी बायें हाथ की बैठक और काम की मुखतारी छोटे बेटों को दी और कहा कि यह कायदा हमेशे के वास्ते चले सो २४ फिर्कों में से आधे दहने हाथ पर और आधे बायें हाथ पर बैठते रहैं । आगूर खां ७२ वर्ष राज करके मरगया ।

कुनखान[1] ।

फिर कुनखां तख्त पर बैठा और बाप के वजीर अरकीलखान की सलह से काम करतों रहा ७० वर्ष बादशाही करके मरा ।

आईखान[2] ।

इस का बाप इसी को वलीअहद कर मरा था इस लिये उसके पीछे यही बादशाह हुआ ।

यलदोजखान ।

आईखां का बड़ा बेटा था उस के पीछे ख़ान (बादशाह) हुआ ।

मंगलीखान ।

यह यलदोज़खान का बड़ा बेटा था बाप की जगह बैठा ।

तंगीजखान ।

बाप के पीछे ११० वर्ष तक राज करतारहा ।

ईलखान ।

ईलखान के ऊपर ईरान से फ़रदून बादशाह के बेटे तूर ने और तातर से तातार और एगुर के खान सोनज ख़ान ने चढ़ाई की मुग़ल उन से खूब लड़े । वे लोग

---

१ कुन तुरकी में सूरज को कहते हैं । २ आई नाम चांद का तुरकी में है ।

दिन को दगाबाजी से भागगये और रात को फिर ईलखान के लशकर पर चढ आये। बड़ी लड़ाई हुई सारा लसकर कट गया। चार आदमी बचे थे सो पहाड़ में जाकर छुपे १ तो ईलखान का बेटा कयानखान था दूसरा उस के मामू का बेटा तकज़ था और दो दोनों की औरतें थीं यह वारदात अगूर खान से १०० वर्ष पीछे हुई।

कयान।

कयान पहाडों में फिरता फिरता एक सजल जँगलमें पहुंचा और वहां सुथान देखकर रहनेलगा उससे जो औलाद हुई वह कयान कहलाई और तकूज की औलादका नाम दरलकीन हुआ यह लोग २००० बर्षमें बहुत बढ़गये और जब इन्हें अरकनां कूलमें रहने की जगह न मिली तो इन्होंने वहां से बाहर निकलने का विचार किया बीचमें १ पहाड पडता था जिसमें लोहेकी खान थी, उसके गलानेके लिये गैंडोंकी खालों की धोंकानियाँ बनाई और बहुतसी भट्टियां दहकाकर लोहे को पिघलाया इसतरह से रस्ता निकालकर बाहर निकले और तातारवगै़रह से अपना मुल्क छुडालिया। मुग-लों का मुल्क पूर्व के ऊजड़ प्रांतों में है! उसका गिर्दाव सात आठ महीने के रस्ते का है उसकी सरहद पूर्व में खता की सरहद से पच्छिम में एगूर की सरहद से उत्तर में करगेज़ और सलीकायकी सरहद से और दक्षिण में तिब्बत की सरहद से मिली हुई थी। यह लोग जंगली जानवरों का मांस खाते थे और चमडे पाहिनते थे

तेमूरताश।

मुग़लिस्तान में फिर आने के पीछे तेमूर ताश जोकयान के ख़ानदानम से था बादशाह हुआ वह कयान से कितनी पीढीपीछे हुआ था यह कुछ मालूम नहीं होता क्योंकि बीच की पीढियाँ किसी ने नहीं लिखीं मगर तवारीख लिखने वालों ने इसदलील से कि ईरान के बादशाह फरदून के वक्त़ में तो मुगलों का राज छूटा-

१ यह उसपहाड़ का नाम था। २ नौशेरवा ईरान का फारसी बादशाह था। संवत् ५८८ मेंतखत पर बैठा था और संवत् ६३६ में मेरा मैंने इसका जीवन-चारित्र उर्दू में लिखाहै।

था और नौशेरखां के वक्त में फिर उनके हाथ आया इनदोनों बादशाहों का ज़माना २००० वर्ष के लगभग है ऐसा अनुमान किया है कि कयान खानकी औलाद २०००वर्ष तक पहाडों में रही थी। उसमें पहिले ४००० वर्षोंमें २८ पीढियां हुई थीं तो उस हिसाब से तो इन २००० वर्षों में २९ हुई होंगी।

मंगलीख्वाजा।

तेमूर ताश का बेटा उसके पीछे मुगूलिस्तानका बादशाह हुआ।

यलदोजखान।

मंगलीख्वाजा का बेटा अरकनाकून से आनेके पीछे बडा बादशाह हुआ जिस ने मुग़लों को बसाया और सुख दिया उस के पीछे मुग़लों में वही आदमी खानदानी और सरदारी के लायक समझा जाता था जो अपनी पीढीयां यलदोज-खान से मिला देता था।

जोईनाबहादुर।

अलदोजखान का बेटा बाम के पीछे तख्त पर बैठा।

आलनकुवा।

यह जोईना बहादुर की बेटी थी इस का विवाह चचेरे भाई जूबून बयान के साथ किया गया था जो कुछ वर्षों पीछे ही मरगया था आलनकुवा १ रात में सुख से सोई हुई थी कि एक अद्भुत प्रकाश डेरे में आकर नाक और मुंह के रस्ते से उस के अन्दर उतर गया और जैसे कि मरयम कुंवारी ही गर्भ से होगई थी वैसे ही यह विधवाभी उस नूर (तेज) से होगई। यह प्रकाश हमेशा उस के डेरे में होजाता था और उस से उस का भी तेज बढ़ता जाता था ओछी समझ के लोग यह विचित्र चरित्र देखकर आलनकुवा को कलंक लगाने लगे तो उसने अपने सरदारों को बुलाकर सब भेद बताया और कहा कि तुम लोग रात दिन पहरा रखकर देखलो कि क्या बात है उन्हों ने ऐसाही किया तो आधीरात को देखा कि एक

---

१ यह हिसाब अटकल पच्चू है इससे जाना जाता है कि मुगलों के पास पुरानी तवारीख नहीं थी। २ इसापैगमबरकी मां।

नूर चांद जैसा चमकताहुआ ऊपर से उतरा और बेगम के डेरे में चलागया इस से सब लोगों का बेगम के कहने का यकीन होगया और दिलों में जो शक था सो सब जातारहा ९ महीने पीछे बेगम ने ३ बेटे जने।

१ "बूक़ोन, कतक़ी" जिससे क़तक़ीन कौम पैदा हुई।

२ "बूसकी, सालजी" जिस से सालजियोत लोग हुए।

३ बूजंजर काआन।

इन तीनों भाइयों की औलाद मुगलों में मुख्य मानी जाती है और उस को नीरून अर्थात् तेज बंशी कहते हैं।

बूजञ्जर काआन।

यह जब बडा हुआ तो तूरान के तख्त पर बैठा तुर्क और तातार वगैरह जो अलग २ अपने खानों के ताबेदार थे सब उसके हुक्म में होगये वह अबू मुसलिम[1] मखजी का समकालीन था।

बूका काआन।

बूकाखान बूजेजर काआन का बडा बेटा था उसने बाप के पीछे न्यायनीति और राजरीति से प्रजापालन किया।

दोतोमनेन खान।

यह बूकाखानका बेटा था बापने अक्लमंदीसे अपनी मौत का वक्त मालूमकरके इसको अपनी जगहपर बैठा दिया इसके ९ बेटे हुए जिनमें नवां भाई कायदूखान था वह तो अपने चचेरे भाई माचीनके पास गया हुआ था और बाकी भाई अपनी मा मनूलून के पास थे। दोतोमनेनखान के मरे पीछे १ दिन दरलकीन कौममेंसे जलायर जातिके लोगोंने क़ाबू पाकर उन सबको मां समेत मारडाला जब माचीनको यह हाल मालूम हुआ तो उसने जलायर लोगो को बहुत दबाया जिससे उन्होंने अपना कसूर कबूलकरके ७० आदमियों को जो उनलोगों के मारने

---

१ अबू मुसलिम १ बड़ा सरदार था उसने बनीउमैया जाति के खलीफों का राज छीन कर अब्बासीखलीफों को सन् १३२ हिजरी संवत् ८०६ में दिलादिया था जिसको सन् ६५६ संवत् १३१४ में मुंगलों ने नष्टकर डाला।

म शरीक थे मारडाला और उनके बालबच्चों को बांधकर क़ायदूखान के पास भेजदिया क़ायदूखानने उनके माथोंपर गुलामी के दाग़ लगाकर उन्हें छोड दिया ।

क़ायदूखान ।

माचीन की मदद से तख्तपर बैठा मुल्क में आबादी बढाई जलायर लोगों से और उससे कई लडाइयां हुईं ।

बाय संगरखान ।

क़ायदूखान के ३ बेटों में से बडा बायसंगरखान बापके पीछे उसकी जगह पर बैठा ।

तोमनाखान ।

बापने मरते हुवे इस सपूत बेटे को राज सौंपा जो बहादुर था और अकलमंद भी था उसने मगूलिस्तान और तुर्किस्थान के बहुतसे बिभाग अपनी बापोती के राजमें शामिल किये । उसकी दो बेगमें थीं एकसे सात बेटे हुवे और दूसरी से दो जोड़ले एक क़बल और दूसरा काचूलीबहादुर—काचूली को १ रात यह सपना आया कि क़बलखान की गोदमें से एक तारा निकलकर आकाशमें चढा और अलोप होगया । ऐसा ३ बार हुआ चौथी बार फिर बडा तारा निकला जिसका उजाला दुनियां में फैलगया और उससे कई तारे और भी चमके जिनसे अलग अलग प्रांतों में रोशनी होगई । फिर जब बड़ा तारा अलोप हुआ तो उसका प्रकाश वैसा ही बनारहा । काचूली की जब आंख खुली तो वह उस सपने का फल सोचनें लगा कि इतने में फिर उसकी आंख लगगई और अब उसने फिर दूसरा सपना देखा कि उस की गोद से ७ बार एक तारा चमका और अस्त होगया । आठवीं बार बहुत बडा तारा निकला जिसने तमाम दुनियाँ में उजाला करदिया और उससे कई छोटे २ तारे और निकले जिससे पृथ्वी के प्रत्येक कोनों कुचालों में रोशनी हो गई. जब वह बड़ा तारा डूबगया तो दुनियाँ में उसी तरह उजाला बनारहा और दूसरे तारे भी वैसे ही चमकते रहे.

दिन निकलते ही काचूली ने सारा हाल अपने बाप से अर्ज किया तो मनाखान ने कहा कि क़बला खान के ३ शाहजादे तख्त पर बैठेंगे और राजकरेंगे लेकि

चौथी बेर इनके पीछे १ बादशाह प्रकट होगा जो दुनियाँ के बहुतसे देशों को फतह करेगा उसके कई बेटे होंगे जिनमें से हरेक एक एक मुल्क में राज करेगा और काचूली के ७ बेटे सरदारी करेंगे आठवां दुनियाँ को फतह करेगा और उसेके बेटों में से हरेक एकजिले का हाकिम होगा.

फिर तोमनाखांन के कहनेसे दोनों भाइयों ने आपस में यह अहदनामा किया कि तख़्त का मालिक तो कबलखान रहे और फ़ौज का काम काचूली करे इसी तरहसे दोनों की औलाद भी पीढी दर पीढी चलती रहे।

यह अहदनामा गोरी खेत में लिखा गया जिसपर (१) तातारी (२) लिपि दोनों भाइयों की मोहर होनेके पीछे तोमना खानने भी आल तमगा अर्थात् अपनी लाल मोहेर करदी थी.

क़बलखान।

तोमनाखानके पीछे कबलखान बादशाह हुआ और काचूली बहादुर उसका काम करता रहा उसवक्त खताका बादशाह अलतान खान था उसने कबलखानसे दोस्ती करके उसको अपने पास बुलाया कबलखान काचूली को राजसौंपकर खता में गया दोनों खानों में खूब मेलमिलाप रहा मगर जब क़बलखान रुखसत होकर अपने देशको रवाना हुआ तो लोगोंने अलतानखानको बहका कर कुछ सवार कबलखान को लौटालाने के लिये भेजे कबलखान तो हाथ न आया बल्कि कई सवारों को जो उसतक जापहुंचे थे मार कर निकलगया। मगर उसका बड़ा बेटा कनबरक़ान भागताहुआ तातारियोंके पंजे में फंसगया वे उसको पकडकर अलता-नखानके पास लेगये अलतानखानने अपने आदमियों के बदले में उसको मरवाडाला कबलखानने वापस आकर छोटे बेटे कुबीलाखानको बली अहद किया और वही उस-के पीछे मुग़ूलिस्तान का खान हुआ।

कुबीलाखान।

कुबीलाखा ने खान होते ही भाई का बैर लेने के लिये बढी भीड़ भाड़ से खता पर चढाई की और अलतानखां को लडाई में हराकर उसका माल असबाब लूट लिया।

---

१ मुगल बादशाहों में यह दस्तूर था कि जिस कागज पर लाल मोहर छाप करदेते थे वह सदाके लिये पक्का होजाता था।

बरतान बहादुर।

कुबीलाखां के पीछे उसका भाई बरतान खान हुआ। वह ऐसा बहादुर था कि उससे कोई लड़ने को न आया इसलिये लोग उसको बहादुर कहने लगे इसके ज़माने में काचूलीबहादुर मरा और उसका बेटा अरुमची बरलास सिपहसालार (सेनापति) हुआ वह बडा बहादुर था इसलिये उसको बरलास का ख़िताब मिला था जिसका अर्थ बहादुर है। बरलास जाति के मुग़ल सब इसीकी औलाद में हैं।

बीसूकाय बहादुर।

बरतान बहादुर के पीछे उसके ४ बेटों में तीसरा बेटा वीसूकाय बहादुर तख्त पर बैठा। इसके वक्त में एक रूमची बरलास मरा और उसके २९ बेटों में से बड़ा " सूगूचचन सिपहसालार हुआ। बीसूकाय बहादुर ने उसकी सलाह से तातार पर चढाई की और जब वहां से जीत पाकर गांव देलूनयलदाक़ में आया तो २० ज़ीकाद सन् ५४९ हिजरी (फागण बदि ७ सं० १२११) को उसकी बीबी विकुलूनअंगा से लड़का पैदा हुआ जिसका नाम बीसूकाय बहादुरने तमूचीन रक्खा सूगूचचन ने कहा कि यह वही सितारा है जो चौथी बार कबलखान की गोद से निकला था।

तमूचीन तुला लग्न में थे राहू तीसरे और केतु नवें घर में था और कोई कहते हैं हिजरी सन् ९८१ संवत् १२४२ में जबकि तमूचीन ने रून जाति की सारी कौमों का सरदार हुआ था सातों ग्रह तुलाराशि में इकट्ठे हुए थे।

तमूचीन।

सन् ५६२ (सं० १२२३। २४) में बेसूकायबहादुर के मरने पर तमूचीन १३ वर्ष की उमर में तख्तपर बैठा। कुछ दिनों पीछे सूगूचिचन मरगया उसका बेटा कराचार नूयान भी छोटा ही था जिससे नेरून जाति के लोग तमूचीन से बदल कर सालजयोत[1] लोगों से मिलगये तमूचीन पहिले तो उन के हाथों से तकलीफ पाता रहा और एक बार कैदभी होगया था मगर फिर जो ईश्वर कृपा

---

१ ज़फ़रनामे में तानजूत नामसे लिखा है पर सही सालजयोत मालूम होता है।

हुई तो उसने सब बलाओं से बचकर जामूका साल्यूत कनकरात और जलायर वगैरह कौमों से खूब लड़ाइयां कीं जब उसकी उमर ३० वर्ष की हुई तो उसने अपने सब खानदानों का हाकिका होगया और ४० वर्ष की उमर में तुर्किस्तान के कईखानों के दुशमन होजाने से कराचार नूयांन की सलाह मान कर कौम करायत के हाकिम आवंगखां के पास गया जो उसके बाप का दोस्त था और उसके वास्ते कई अच्छे अच्छे काम और संग्राम किये खान भी बहुत महरबानी करता था जिससे वहां के बड़े बड़े खानों और खान के खानदानवालों ने ईर्षा से खान के बेटे शंकू को बहकाया. और उसकी मारफत तमूचीन की बुराइयां कराकर खान का दिल भी उस से फिरादिया। तब तो तमूचीन बहुत घबराया और करा-चारनूयांन के उपाय करने पर वहांसे निकला और रस्तेमें दोबार उनलोगों से बडी २ लडाइयां लड़ा और जीता फिर ४९ वा ५० वर्षका होकर सन ५९९ के रमजान (संवत १२६० के जेठ सुदी) में बादशाह हुआ तीन वर्षपीछे तंकरी नाम एक देवताने उसका नाम चंगीजखान (बादशाहों का बादशाह) रक्खा उसदिन से उसका पराक्रम और प्रताप बढनेलगा। खता, खुतन, चीन, माचीन, कुबचाक, सकीन, बुलगार, आस, रूस, और आलन वगैरह तमाम मुल्कोंमें उसका राज्यहोगया। उसके ४ बेटे जूजी चगताई, औकदाई, और तूली थे।

दरबार और शिकारका काम जूजी को, इनसाफ और दंडदेनेका चगताई को राजका ओकदाई को और फौजका काम तूली को सौंपा गयाथा।

हिजरी सन ६१५ (सं० १२७५) में चंगीजखांने "ख्वारजम" के बादशाह सुलतान मोहम्मदके ऊपर चढाई करके उसदेशको गुस्सेसे कतल करडाला फिर उसने आमूया नदीसे उतरकर बलखपर धावाकिया और तूलीखां को खुरासानपर भेजा। ईरान और तूरान फतह होनेके पीछे चंगेजखां बलखसे तालकानमें आया वहांसे

---

१ तुरकी, भाषा, में, तंकरी, वा, तंगरी, परमेश्वर, का, नामहै । २ यहां से चंगीजखां की चढ़ाईयां मुसलमानी मुलकों पर होने लगी थीं।

सुलतान जलालुद्दीनके ऊपर चढा और उसको सिंधनदी तक भगाकर तूरान होता हुआ अपनी जन्मभूमी में लौट आया। यहां चार सफरसने हिजरी ६२४ (माहसुदि ६ संवत् १२८३) *को तंगकूत देशकी सीमामें मरगया परन्तु पहिले ही यह कह चुकाथा कि जो म इससफर में मरजाऊं तो मेरे मरने को छुपाये रक्खें जब तक कि तंगकूतवालों का पाप न कटजावे और दूरदेशों में बखेड़ा न पडे। उसके बेटों और अमीरों ने ऐसाही किया यहांतक कि तंगकूत वाले बाहर निकले और मारेगये फिर इसकी लाशका संदूक लेकर चले और जो आदमी मिला उसको मारते गये कि जिससे यह खबर इधर उधर न फैले १४ रमज़ान (भादो सुदि १९ संवत् १२८४) को बडे लशकर में पहुँचने पर यह बात जाहिर हुई और लाश एक दरख्त के नीचे गाडी गई जिसको एक दिन चंगीजखां ने अपनी कबर के वास्ते पसंद कर लियाथा। जहां थोडे ही दिनों में ऐसी सघन झाडी हो गई कि जिस में कबर छुपगई और फिर किसी को उसका पता नहीं लगा कि कहां थी.

चंगीजखां ने ७४ वर्ष की उमर पाईथी जिसमें से २९ वर्ष राज और दिग्विजय में बीते थे वह कराचारनूयान की सलाह से राज करता था मरने से कुछ पहिले उसने सब बेटों और अमीरों को जमा करके खानी (बादशाही) ओकुदाईको दी काचूली और कबलखान का अहदनामा खज़ाने से मंगाकर सब के सामने पढा जिस तोमनाखानसे लेकर चंगीजखान तक सब खानोंने अपनी २मोहरें कीं थीं उसने कहा मैंने भी इसी अहदनामके मवाफिक कराचारनूयानके साथ बरताव कियाहै तुमभी ऐसेही करते रहना। फिर उसने एक और अहदनामा ओकदाई और दूसरे बेटों तथा भाई बंदोंने आपसमें लिखाकर ओकदाईको सौंप दिया कि तूरान तुर्किस्तान ख्वारम एगूर काशगर बदखशां और गजनीन के देश सिंधु नदीतक चगताई को दिये और

---

* सन् आर संवत् का मीलाने नहीं होता। ज्ञात हो कि हिजरी सन् और संवत् का अंतर सदा एक सा नहीं रहता अपने संवत्में लौर होनेसे ३६५ $\frac{9}{6}$ दिनका वर्षहोता है और हिजरी सन् का कुल ३६० दिनका, अतः सन् हिजरी से संवत् निकालने की विधि यह है कि सन् में से उसके ३ सैकड़ा घटा देवे कि ६७९ नौ बढावे तो संवत्बनजायगा जैसे ६१५ में १८ घटाये तो रहे ५९७ उसमें ६७९, १२७६ इत्यादि।

वह अहदनामा कबलखान और काचूली बहादुरका भी उसीको सौंपा और कहा कि कराचारनूयान के कहने से कभी बाहर मत होना और उसको अपने मुल्क या मालमें शरीक समझना फिर चगताई और कराचारनूयान के बीचमें बाप बेटेका सा नाता कायम कर दिया जिस से कराचारनूयान की औलाद भी चगताई कहलाने लगी ।

चग़ताई खान।

चगताईखानने बापके पीछे पेशबालाग नाम शहरको अपना राज्यस्थान बनाया और सारा काम अपने राजका कराचारनूयान को सौंप दिया । आप बहुधा ओकदाई का आनकी खिदमत में रहा करताथा उमर में उससे बड़ाथा तौ भी बाप के कहने से उसकी बंदगी में कुछ कसर नहीं रखता था । ओकदाई काआन से ७ महीने पहिले जीकाद सन् ६३८ के शुरू (द्वि० वैशाखसुदि संवत् १२९७) में मरगया कराचारनूयानने उसके पोते और मवातकान के बेटे कराहलाकूखान को गद्दी पर बैठाया ।

क़राहलाकूख़ान।

उधर ओकदाई काआन ने अपने बेटे कूचू को वलीअहद किया था वह बाप की जिंदगी में ही मरगया तो उसका बेटा शेरामून वली अहद हुआ और वही दादा के पीछे काआनी की गद्दी पर बैठा । मगर तीनचार वर्ष बाद उसका काका कयूकखान रूस की तर्फसे आकर काआन हुआ और उसने कराहलाकूखां को उठा कर यसूमनका को चगताईखान की गद्दी पर बैठाया ।

यसूमनका।

यह भी चगताईखान का बेटा था और मवातकान का भाई था इसके मरने पर कराचारनूयानने फिर कराहलाकूखान को गद्दी पर बैठा दिया ।

फिर कराहलाकूखान।

अब इसके राज में सन् ६५२ (सं० १३११) में कराचारनूयान ८९ वर्ष का होकर मरा उसके १० बेटों में से एजैलनूयान अपने बाप का कायममुकाम हुआ ।

---

१ सम्राट् शाहंशाह । २ यहां से तवारीख हबीबुलसियर को भी कुछ बातें लीगई हैं ।

मुबारकशाह ।

कराखां के पीछे उसका बेटा मुबारक़शाह बादशाह हुआ। उसे चगताईखान के पोते और यामदार के बेटे अलगूखानने कुछ दिनों के लिये निकालकर तख्तछीन-लिया था मगर उसने सन् ६६२ (सं० १३२० । २१) में फिर अपना मुल्क लेकर एजलनोयानको मुखतारी का काम देदिया जिससे सब चगताई राजी होगये।

बराकखां (बराक औगलान)

उधर मग़लिस्तानमें तोली खान का बेटा मंगूखान कयूकखांनको निकालकर आप काआन होगया था। उसका भाई कुबेलाखान चीन और खता का बादशाह था उसने मुबारकखान के चचा बराकखान को तूरान की बादशाही दी।

नेकबेखान और बूकातैमूर ।

ये भी चगताईखान के पोते थे बराकखान के पीछे दोनों बारी बारी से थोडे २ दिनों बादशाही करगये फिर बराकखानका बेटा ददाखान बादशाह हुआ।

इन बादशाहों की पलटापलटी के बखेडेसे एजलनोयान काम छोड़ कर कश में जाबैठा जो उसकी जागीर का शहर था मंगूकाआन ने उसको अपने भाई हलाकूखान के साथ ईरान में भेजा उसने तबरेज़ की वलायत में मरागा नाम परगना एजल नोयान को देकर बड़ी इज्जत से अपने पास रक्खा.

ददाखान ।

ददाखान जब तूरान के तख्त पर बैठा तो उससे अमीर एजलनोयान के बेटे अमीर एलंक़ज को अपना सिपहसालार बनाया बाद अपना धर्म छोड कर मुसल-मान होगया.

ददाखान के पीछे ९ बादशाह ।

१ कंजूखान ददाखान का बेटा।

२ यालीगूखान, क़दाईखान का बेटा, बूरीखानका पोता मवातूकान का परपोता.

३ एनसबूकाखान, ददाखानका बेटा।

४ कीकखान ददाखान का बेटा सन् ७२१ (सं० १३७८) में मरा।

५ कीकक्क, कीकखान का बेटा।
६ लालकश्त
७ एल, जकदाई, खान।
८ ददातेमूर ददाखान का बेटा।
९ तरमशेरीनखां बूरान का बेटा ददा तेमूर का पोता।

तरमशेरीनखान।

इसके राज में अमीर अलंकज मरा उसका बेटा अमीर बरकुल अपना बापोती का काम चचेरे भाइयों को देकर कश में आराम से रहनेलगा, उसका बेटा अमीर तुरागाई था और तुरागाई का बेटा अमीर तैमूर भी तरमशेरीनखां के वक्त मेंहीं (सन् ७३६ सं १३९३) में पैदा होगया था।

हम यहां से चंगेजखानी बादशाहोंको छोड़कर तैमूरिया बादशाहोंका सिलसिला छेड़तेहैं जो ३०० वर्षके लग भग हिन्दुस्तानमें अपनी डोंडीपीटते रहे थे और चंगेजखांके पोतों को कई पीढी तक हमले करनेपर भी कुछ लाभ न हुआथा।

इन हमलें का हाल भी हिन्दुस्तानकी तवारीख जानने की इच्छा रखनेवालोंके लिये उपयोगी होनेसे आईन अकबरी और तवारीख फरिश्ताके आधार पर हमला करनेवालों के नामों सहित यहां लिखदेतेहैं।

हिन्दुस्तानपर मुगलोंके हमले और हमलाकरनेवाले मुगल।

१ चंगेजखान।

सन् ६१८ (संवत् १२७५) में खुद चंगेजखान ख्वारजमके बादशाह जलालुद्दीन का पीछा करताहुआ सिंधु नदीतक आया और कई हजार हिन्दूमुसलमानों को पकड़लेगया उसवक्त हिन्दुस्तानका बादशाह सुलतान शमसुद्दीन एलतमश और सिंधका नासिरुद्दीन कबाचा था जलालुद्दीन सिंध में दो वर्ष तक नासिरुद्दीनसे लड़ता और उसका मुल्क लूटता रहा।

---

१ ये हमले ईरान और तूरान की तर्फसे होतेथे क्योंकि दोनों देशों में मुगलो का राज्य था।

२ तरमतीनोईन।

चंगेजखां के बड़े अमीरों में था सुलतान जलालुद्दीन के पीछे आकर मुलतान पर कबजा कर बेटा नासिरुद्दीन कबाचाने बड़ी मुश्किलोंसे उसे निकाला।

३ चगताई खान।

फिर चंगेजखानने अपने बेटे चगताईखानको जलालुद्दीनके पकड़ने को भेजा जलालुद्दीन तो ईरानकी तर्फ निकलगया और चगताईखांने सन् ६२० (सं० १२८०) में मुलतानको घेरा पर लशकरमें बीमारी फैलने से तीस चालीस हजार हिन्दुस्तानियोंको जो उसके लशकरमें कैदथे कतल करके तूरान को कूच किया।

४ ताहर।

ताहरने जो चंगेजखांके अमीरोंमें से था पंजाबमें आकर १९ जमादिउल आखिर सोमवार सन् ६३९ (माह वदि २ सं० १२९८) को लाहोर को घेरलिया वहां का हाकिम मलिक कराकश कुछ देर लड़कर आधी रात को दिल्ली की तर्फ़ चलदिया मुगलों ने कायदे के मुवाफिक शहर को लूटा खराब किया और बहुत से आदमियों को पकड़ा शमसुद्दीन के बेटे मोअज्जुद्दीन बहरामशाह ने यह खबर सुनकर फ़ौज भेजी तो मुगल चले गये।

५ मुगलों की फौज।

सन् ६४२ (सं० १३०१) में जब कि मोअज्जुद्दीन का भाई अलाबुद्दीन मसऊदशाह दिल्ली का बादशाह था तभी मुगलों की फौज बंगाल में आई। बादशाह ने लखनौती के हाकिम तुग़ाखान की मदद के वास्ते फ़ौज भेजी जिससे मुगल हार कर लखनोती से चलेगये।

६ मनकोया।

सन् ६४३ (सं० १३०१) को मनकोया मुगलने कंधार औरतालकां की तर्फ़ से सिंध में पहुँचकर उब के क़िले को घेरा। सुलतान अल्लावुद्दीन मसऊदशाह खुद उससे लड़ने को गया जब व्यासनदी पर पहुंचा तो मुग़ल भागगये।

७ फिर मुगलों की फौज ।

सन् ६५५ के अख़ीर (सं० १३१४) में, जब कि सुल्तान नासिरउद्दीन दिल्ली की बादशाहत पर था, मुगलों की बहुतसी फ़ौज उच्च और मुलतान पर आई बादशाह चार महीने अपना लशकर जमा करके उसके मुक़ाबिले को गया मगर मुगलसेना लड़े बिनाही पीछी चली गई ।

८ हलाकूखान का वकील ।

सन् ६५८ के रबीउल अव्वल महीने (संवत १३१६ के माह या फागुण) में ईरान के बादशाह हलाकूखान का वकील दिल्लीमें आया । गयासुद्दीन बलबन जो उन दिनोंमें बडा वजीर था ५० हजार सवार दो लाख पैदल २ हजार जंगी हाथी और ३ हजार गाड़ियां आतिशबाजी को लेकर बड़ी धूमधाम से नौबत और नक्कारे बजाता हुवा पेशवाई को गया और वकील को हिन्दुस्तान की बादशाही का सारा ठाटबाट दिखाता हुआ उसे बादशाह के हज़ूर में लाया उसदिन दरबार भी ऐसी शानशौकत से सजाया गया था कि जिसके देखते ही वकील की भी आंखें चकरा गईं।

९ सारीनूयान ।

फिर तूरान की तरफ से सारीनूयान बड़ा भारी लशकर लेकर सिंध में आया । सुलतान नासिरुद्दीनने अलगखां (गयासुद्दीनबलबन) को उस के मुक़ाबिले पर भेजा पीछे से ख़ुदभी रवानेहुआ यह खबर सुनते ही सारीनूयान लौट गया ।

१० तैमूरनूयान ।

जब हालाकूखानका पोता और अयाकखान का बेटा अरगूखान ईरान के तख्त पर बैठा तो तैमूरनूयान जो हिरात कन्धार बलख़ बदख़शां गज़नी गोर और बामियां बगेरह का हाकिम था पिछले वर्ष की हार का बदला लेने के लिये बीस हजार सवारों से लाहोर और देपालपुर को लूटता हुआ मुलतान पर आया तो वहां सुलतान गयासुद्दीन बलबन के बेटे क़दरखान से लड़ाई हुई जिस में क़दरखान जिस का दूसरा नाम सुलतान मोहम्मदखां भी था मारागया और मुग़ल लूटमारकर के लौटगये इस के बाद फिर ७ वर्ष तक उन का कोई लशकर हिन्दुस्तान में नहीं आया ।

११ मुग़लोंका फिर आना।

सुलतान मोअज्ज़ुद्दीन के कुबाद के वक्त में जो सन् ६९९ (संवत् १३४३) में बादशाह हुआ था, फिर मुगलों का लशकर लाहोर के पास आया मगर वह मलिक यारबेग वग़ैरह दिल्ली के अमीरों से लड़ाई हार गया बहुत से मुग़ल मारे गये और बहुत से दिल्ली में पकड़े आये ।

१२ अबदल्लाहखान।

सन् ६९१ (संवत् १३४९) में अबदुल्लाहखान एक लाख सवार लेकर काबुल के रस्ते से हिन्दुस्तान पर आया । दिल्ली से सुलतान जलालुद्दीन फीरोज खिलजी उस के मुकाबिले को गया पिशौर के पास बड़ी लड़ाई हुई बहुत मुगल मारे गये कुछ सरदार उन के कैद हुवे फिर कुछ भले आदमियों ने बीच में पड़कर सुलह करादी । अबदुल्लाहखान ने जो हलाकूखान का दोहिता था सुलतान को बाप बनाया और सुलतान ने भी उस को बेटा कहा दोनों अपने २ लशकर से सवार होकर आये और मिले फिर दोनों तर्फ से सोग़ातें ली दी गईं । अब्दुल्लाह खान तो लौट गया मगर अलगूखान जो चंगेजखां का दोहिता था और चारहजार मुग़ल जोरूं बच्चों समेत सुलतान के पास रहगये सुलतान ने अलगूखां को मुसलमान करके अपना जमाई बनालिया ।

१३ ददाखानके १ लाख मुगलोंका आना।

सन् ६९६ (सं० १३५४) में अलाउद्दीन के बादशाह होने पर तूरान के बादशाह ददाखान ने एक लाख मुगलों को सिन्ध पंजाब और सुलतान फतह करने के लिये हिन्दुस्तान को रवाने किया । अलाउद्दीन ने यह सुनकर अलगूख़ान और जफ़रखान को भेजा लाहोर के पास लडाई हुई १० हजार मुगल मारेगये और बहुतसे कैद होकर कतल हुए ।

१४ सलदी, वा, चलदी, मुगल।

सन् ६९७ (संवत् १३५५) में जब कि दिल्ली का लशकर गुजरात फतह करने को गया हुआ था सलदी ने अपने भाई और बहुत से मुगलों के साथ सिन्ध में आकर सेवस्थान का किला फतह कर लिया । सुलतान अलाउद्दीनने जफ़रखांको

भेजा । उस ने सेवस्थान फतह करके सलदी, उस के भाई और १७०० मुगलों को जिन के जोरू बचे अलग थे पकड़ा और बादशाह के पास भेज दिया ।

सन् ६९७ के अखीर (संवत १३९९) में ददाखान का बेटा कतलकख्वाजा दो लाख मुगलों के साथ तूरान से आकर सिन्ध नदी से उतरा और दिल्ली तक बढ़ाचला आया । कहीं लूट मार नहीं की तो भी हर जगह से इतने औरत मर्द दिल्ली में आकर जमा होगये थे कि बाजारों और मसजिदों में कहीं खड़े रहने को भी जगह नहीं थी । नाजपानी आने के रस्ते बन्द होगये थे सुलतान अलाउद्दीन ने अमीरोंको बुलाकर लश्कर जमा करने का हुक्म दिया । परन्तु अमीर तो पहिले से घबराये हुए थे तरह २ के बहाने करते थे पर बादशाह ने नहीं माना तीन लाख सवार और २७००० जंगी हाथियों से लड़ने को गया । हिन्दुस्थानमें दिल्लीलेनेके पीछे फिर कोई इतनी बड़ी लड़ाई नहीं हुई थी । आखिर अलावुद्दीन जीता मुगल इतने बहुत मारे गये कि सब मैदान और जंगल उनकी लाशों से पट गया और कतलकर-ख्वाजा ऐसा जी छोड़कर भागा कि उसने हिन्दुस्तानियों के डरसे तीस कोश तक पीछे फिरकर न देखा.

१५ तुरगीमुगल ।

सन् ७०३ सं० १३६०) में जब कि सुलतान अलावुद्दीन चित्तोड़ के किले को घेरे हुवे थे तुरगी मुगल हिन्दुस्तान को लूटने आया, सुलतान चित्तोड़ फतह करके जलदी से दिल्ली को लौटा मगर उसके पहुंचनेसे पहिले तुरगी एक लाख बीस हजार सवारों से दिल्ली के पास जमना तक पहुंचगया था । बादशाहका बड़ा लशकर दक्खनमें वारंगल फतह करने को गया था और बहुत से बड़े बड़े अमीर जागीरों में थे और मुगल दिल्ली में घुस २ कर लूट मार कर जाते थे बादशाह हैरान था कि क्या करें तो भी वह दिल्ली से निकलकर लड़ने को गया तुरगी बहुत सा माल लूट चुका था इसलिये मुकाबिला किये बगैर दो महीने पीछे दिल्ली से चलागया ।

१६ अलीबेग और तरताल ख्वाजा ।

सन् ७०४ (सं० १३६१) में चंगेजखां का नवासा[1] अलीबेग और तरताल ख्वाजा ३० । ४० हजार सवारों से सवालक पहाड के नीचे २ अमरोहे तक चलाआया

---

१ दोहिता ।

और लूट मार करने लगा । सुलतान अलाबुद्दीन ने मलिकगाजी तुगलक को बहुत से लशकर के साथ भेजा । मलिकगाजी मुगलों से लड़ा और जीता दोनों सरदारों और बहुतसे मुगलों को बादशाह के पास पकड़ लाया बादशाह ने सबको अपने सामने मरवाडाला ८००० मुगलों के सिर और २० हजार घोड़े लूट में आये थे बादशाहने घोड़े तो अमीरों को बांटदिये और मुगलों के शिर गारे और पत्थर की जगह बुरजों की भरती में डलवाकर मलिकगाजी तुगलक़ को पंजाब का सूबेदार करदिया ।

१७ कपकमुगल ।

सन् ७०५ (संवत् १३६२) में कपक नाम मुगल जो ददाखां के उमदा अमीरों में से था अलीबेग और तरताल ख्वाजा का बदला लेनेके लिये सुलतानकी तर्फ से सवालक पहाड़में आया मलिक गाजीने सिंध नदी पर जाकर रस्ता रोक लिया जब मुग़ल लूटका माल लेकर वापस जाने लगे तो धावा करके कपक को पकड़ लिया और दिल्लीमें भेज दिया जहां वह और उसके साथी हाथियोंसे घिस्टावा कर मारेगये और उनके शिरोंसे बदाऊँ दरवाजे के बाहर जंगल में १ बुर्ज बनवाया गया और उनके जोरूं बच्चे हिन्दुस्तानके शहरोंमें बिकवादिये गये ५० । ६० हजार मुगलों में से केवल तीन चार हजारसे जियादा जीते नहीं बचे.

१८ इकबालमंद ।

थोडे ही दिनों पीछे इकबालमंद नामका एक मुगलसरदार हिन्दुस्तान में आकर फिसाद करने लगा, मलिक गाजीने चढ़ाई करके उसको भी मारडाला और बहुत से मुगलोंको पकड़ कर दिल्लीमें भेज दिया, जहां वे हाथियों के पैरोंमें कुचलवा दिये गये । इसके पीछे फिर कोई चढाई मुगलों की तूरानकी तर्फसे सुलतान कुतुबुद्दीनके तख्त तक नहीं हुई और मुग़ल ऐसे डरगये थे कि मलिक गाजी तुगलक हरसाल पंजाब से काबुल गजनी कंधार और हिरात तक धावे मार मार कर उनके इलाकों को लूटता था ।

१९ ईरानके मुगलबादशाह खुदाबंदे सुलतान कुतुबुद्दीनसे सुलह कर लेना ।

ईरानके मुगलबादशाह सुलतान खुदाबंदा ने ख्वाजा रसीद को सुलतान अला-

बुद्दीन के बेटे कुतुबुद्दीनके पास जो सन् ७१७ (संवत् १३७३) में तख्त पर बैठा था ख्वाजा रेसीद को भेजकर सुलह और दोस्ती करली।

२० तूरानके बादशाह तरमशरीनखां का हमला।

सुलतान कुतुबुद्दीनके पीछे मलिकगाजी तुगलक चार वर्षतक हिन्दुस्तानका बादशाह रहा उसके वक्तमें तो मुगलों की कोई चढाई न हुई मगर उसके बेटे मोहम्मद तुगलक के तख्त पर बैठने के दो वर्ष पीछे ही सन् ७२७ (सं० १३८४) में ददाखांके बेटे तरमशरीनखानने जो चगताई खान के घरानेमें से तूरान का बादशाह था बहुतसी फौज के साथ हिन्दुस्तानकी सरहदमें दाखिल होकर लमगान और मुलतान से दिल्ली के दरवाजे तक अमलदखल और लूट मार करके इतना दबाव डाला कि मोहम्मद तुगलक ने लाचार होकर इतना बहुत रोकड़ रुपया और जवाहरात भेट किया कि जिसमें तरमशरीनखान राजी होकर दिल्लीसे तो कूच करगया मगर गुजरात और सिंधसे बहुत सी लूट और कैदियों को लेकर सहीसलामत अपने वतन में जापहुँचा।

मोहम्मद तुगलकने तरमशरीनखां को जो नजराना देकर अपनी जान इज्जत और रैयत को बचायां था उसका यह असर हुआ कि फिर कोई मुगलोंका हिंदुस्तान लूटने को नहीं आया बल्कि जब मोहम्मद तुगलक को अपने बागी अमीरोंको फिसाद मिटानेके लिये फौज की जरूरत हुई तो अमीर करगनने सन् ७५१ (संवत् १४०८) में ५ हजार मुगलसवारों को अलतून बहादुर नाम अपने १ सरदार और ५००० मुगल सवारोंको सुलतानकी मदद पर भेजा सुलतान उस वक्त सिंधमें था और बीमार था थोडे दिनों पीछे ही मरगया। मुगलोंने लशकर लूटना शुरू करदिया। मगर सुलतान फीरोजने जो सुलतान मोहम्मद का चचेरा भाई था तख्तपर बैठकर मुगलों को सजादी। तब अलतूनबहादुर और अमीर नोरोज गुरगीन जो तरमशरीनखां का जमाई था और सुलतान मोहम्मद के पास रहता था। यहां रहनेमें फायदा न देखकर अपने देश को चलागया। इनके पीछे अमीर तैमूर और बाबर बादशाह ने आकर दिल्ली फतह की और हिन्दुस्तान में अपना राज जमाया जिसका हाल दूसरे और तीसरे खंडमें लिखाजावेगा॥ ॥ इति प्रथमखंड समाप्त॥

---

१ इस ख्वाजा रशीद ने १ बड़ी तवारीख जामेरशीदी नाम बनाई है जिस में मुगलों का बहुत हाल है।

दूसरा खंड ।

तैमूरिया बादशाहों का इतिहास ।

अमीर तैमूर ।

अमीर तैमूर तक बादशाही इनके घराने में नहीं थी । सिपहसालारी थी । सो भी तैमूर का दादा अमीर बरकुल छोड़ बैठा था । तैमूर की और चंगीजखान की पीढ़ियां ऊपर जाकर तोमनाखान से मिलजाती हैं । जिस के दो बेटे कबल-खान और काचूली बहादुर थे. कबलखान की औलाद में बादशाही और काचूली की औलाद में सिपहसालारी रहने का अहदनामा तोमनाखान के वक्त में ही लिखागया था । हम दोनों की पीढियां पिछले खण्ड में लिखेआये हैं यहां फिर भी अमीर तैमूरकी पीढियां पाठकों को सुभीता रहने के लिये लिखते हैं ।

१ तोमना खान मगूलिस्तान का बादशाह.
२ काचूलीबहादुर.
३ एरूमची, बरलास.
४ सुगूचीचन.
५ कराचार नूयान सन् ६५२ (सं० १३११) में मरा.
६ एजलनूयाँन.
७ अमीर एलंगज मुसलमान हुआ.
८ अमीर बरकुल.
९ अमीर तुरागाई सन् ७६२ (सं० १४१७।१८) में मरा.
१० अमीर तैमूर साहिबकरांन.

अमीर तैमूर २५ शाबान सन् ७३६ मंगल की रात (बैशाख बदि १० सं० १३९३) को शहर सब्ज इलाका कुश विलायत तूरान में तगीना खातून से पैदा हुआ था इस के पीछे तीन भाई और दो बहनें और भी जन्मीं थीं जिन के नाम आलमशेख, सयूरगतमश, जो की कतलग तुर्कानआगा और शीरीनबेगीआगा थे ।

अमीर तैमूर का जन्म मकर लग्न में हुआ था इस की जन्मपत्री जफ़रनामे में लिखीहै जो इनके इतिहासका एक सविस्तर ग्रंथ है इनके जन्मसमयमें तूरान का खान तेरमशीरीन खान था और ईरान का बादशाह सुलतान अबूसईद जो हलाकूखान की औलाद से था ४ महीने पहिले बेऔलाद मरचुका था।जिस से उस राज्य में बखेडा पडाहुआ था। अमीर तैमूर ३६ वर्षका हुआ वहां तक ईरान तथा तूरान में और भी बहुत सी खराबियां आपस की आपधापी से फैलगई थीं जिन से यह बादशाह होने और मुल्कों के फतह करने का मौका देखकर १२ रमजान सन् ७७१ बुधवार (प्र० वैशाख सुदि १३ संवत् १४२७) को अमीर तैमूर बलख से तख्त पर बैठ और ३६ वर्षतक दिग्विजय करके वह तूरानखार जभ तुर्किस्तान, खुरासान, ईरान, आजरबायजान, फारस, माजंदरान किरमान दयार,बक्र,खोजिस्तान, मिश्र,शाम, और रूम वगेरह वलायतों का बादशाह होगया। जीकाद सन् ७८९ (अगहनसुदि सं० १३४४) में असफहानवालों की बदमाशीसे उस शहर में कतलआम किया वहांसे जाकर फारस के बादशाहों को जीता।

दो दफ़े कबचाक़ जंगल के बादशाह तुंर्कीमशखान पर चढ़ाई करके फतह पाई और उस १००० कोसलंबे और ६०० कोस चोड़े जंगल को झगड़ों और बखेड़ों से साफ़ किया।

सन् ७९५ (संवत् १४४९।५०) में शीराज के बादशाह मुजफ्फर को मारकर तैमूरने ईरान के मुल्कों में कबजा किया। फिर बगदाद और गुर्जिस्तान जीते।

---

१ यहचंगेज़खांके बेटे जूजी खां की औलाद में २३ वां जानशीन था। २ तरमशरीनखान यों तो कई बादशाहोंके पीछे चगताईखानके तख्तपर बैठाथा परन्तु वह चगताईखांन की छटी पीढ़ी में था–१ चगताईखान २ मसूकान ३ मसूनतवा ४ बराकखान ५ ददारगन ६ तरमशरीनखान (तरमशीजीनखान) अकबरनामा जिल्द १ पेज ६। २ यह चंगेज़खानके बेट जूजींखान की औलाद में २३ वां बादशाह था।

१२ मोहर्रम सन् ८०१ (आसोजसुदि १३ संवत् १४९९) को सिंधनदी पर पुलबांधकर उसने हिन्दुस्तान को फ़तहकिया । सन् ८०३ (सं० १४९७ । ९८) में शाम पर चढ़ाई करके उसने हलब और दमश्क में फतहके झंडे गाडे ।

१९ जिलहज्ज शुक्रवार सन् ८०४ (प्र० भादोबदि ४ संवत् १४९९) को रूम के कैसर एलॅद्रुम को लडाईमें पकड़ा और छोंड़दिया ।

मिश्र मक्के और मदीने में उनके नाम का खुतबा पढागया और सिक्का चला ।

जीकाद सन् ८०६ (सं० १४६१ के ज्येष्ठ) में फीरोजा कोह पर जाकर एक दिनमें उसको फतह किया ।

१ मोहर्रम सन् ८०७ (सावनसुदि ३ सं १४६१) में नशापुर के रस्ते से अपने वतन तूरान में आकर बहुत बडा उत्सव किया फिर खता (चीन) के फतह करने को कूच किया मगर समरकंद से ७६ कोस पर गांव अतरार में पहुंच कर १७ शाबान सन् ८०७ (बुध चैतंबदि ३ सं० १४६१) की रातको उसने परलोक का रस्तालिया ताबूत बड़ी धूमसे समरकंद में आया और दफन किया गया.

अमीर तैमूर के चार बेटे थे १ जहांगीर मिरजा जो बाप के जीतेजी सन् ७७६ (सं० १४३१) में मरगया था उसके २ बेटेथे ।

१ मोहम्मदसुलतान जिस के दादा ने वलीअहदकिया था मगर वह भी ७ शाबान सन् ८०९ (फाल्गुणसुदि ९ सं० १४९९) को रूम में मरगया ।

२ पीरमोहम्मद जिस को अमीर तैमूर ने वलीअहद करके गज़नी और हिन्दुस्तान की हुकूमत दी थी और अपने पीछे उसके हुक्ममें रहने की सब को वसीयत कीथी वह १४ रमजान सन् ८०९ (फागुणबदि १ सं० १४६३) को अपने एक अमीर के हाथ से मारागया ।

---

१ एलद्रुमबायजीद की औलादमें तो अबतक रूमका राज चलाआता है और तैमूर की औलाद में अब कहीं चप्पे भर भी जमीन नहींहै ।

दूसरा बेटा उमरशेख था जिसको फारस की हकूमत दीगई थी वह भी बापके जीते जी रबीउलअव्वल सन् ७९६ (माघसुदि सं० १४५०) में मरगया था।

तीसरा बेटा जलालुद्दीन मीरांशाह था जिस का हाल आगे आवेगा।

चौथा बेटा मिरजा शाहरुख था यह खुरासानका हाकिम था और अकसर लड़ाइयों में बाप के साथ रहा करता था और बाप के पीछे ईरान तूरान और बापोती के मुलकों में कबजा करके ४३ वर्ष एकछत्र राज करने के पीछे २५ जिलहज्ज रविवार सन् ८५० (चैतबदि १२ संवत् १५०३) को मरगया। उसका जन्म १४ रबीउलअव्वल गुरुवार सन् ७७९ (सावन सुदि १५ सं १४३४) को हुआ था।

अमीर तैमूर के इन चारों बेटों की औलादने ऊपर लिखे हुए मुल्कों में १०० वर्ष के लगभग राजकिया फिर आपस की फूट और आपाधांपी से उजबको तथा अपने ही नोकरों के हाथ से नष्ट होगया; सिर्फ मीरांशाह की औलाद में से एक बाबरबादशाह दुशमनों से बचकर काबुल में आया था सो भाग्यबलसे हिंदुस्तान फतह करके अपनी औलादके विर्सें में छोड़गया और इसीका इतिहास हमको अपने देश के संबंधमें लिखनाहै इसवास्ते अमीर तैमूर के दूसरे बेटों का वृत्तांत छोड़ कर मीरांशाहसे बाबरबादशाह के बाप उमरशेख मिरजा तक संक्षिप्त इतिहास लिखकर इस खंडको खतम करते हैं।

जलालुद्दीन मीरांशाह।

मीरांशाह सन् ७६९ (संवत् १४२४) में पैदा हुआ था इसके बापने इसको इराक अजम, इराक अरब, आजरबायजान, दयारबक्र और शामकी हुकूमत हिन्दुस्तानको जाते समय दीथी। वह एक दिन शिकार में घोड़ेसे गिरपड़ा था और जिससे सिरमें सख्तचोट आई अकल में फितूर पड़गयाथा। बड़ा बेटा अबाबक्रमिरजा राज्यका काम करताथा वही अमीर तैमूरके मरनेके पीछे भी बापके नाम का खुतबा और सिक्का चलाकर राजभी करने लगा।